इस नाटक के मंचन-प्रसारण अथवा किसी भी प्रकार के उपयोग आदि के लिए प्रकाशक की पूर्व-लिखित अनुमति प्राप्त करना जरूरी है ।

प्रकाशक

शारदा प्रकाशन
16/एफ-3 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

ख़्वाबे-हस्ती

(जीवन-सपना)

आग़ाहश्र काश्मीरी

सम्पादक

डॉ० कृष्णदेव झारी

शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली

आगाहश्र काश्मीरी

आगा हश्र काश्मीरी हिन्दी-उर्दू के प्रसिद्ध नाटककार हैं। दुर्भाग्य से हिन्दी वालों ने आज तक उनके प्रति उपेक्षा का भाव जताया, उनके कृतित्व का कोई समुचित और समग्र अध्ययन किसी ने नहीं किया। उनके प्रति हिन्दी जगत् में एक पूर्वाग्रह का प्रचार ही प्रचलित हो गया कि उन्होंने पारसी व्यावसायिक नाटक-मण्डलियों के लिए नाटक लिखे हैं और चूंकि पारसी व्यावसायिक नाट्य मंडलियों और कम्पनियों का उद्देश्य दर्शकों का सस्ता मनोरंजन कराना था, अतः उनके नाटक भी साहित्यिक उच्च स्तर के नहीं हैं···। कुछ ऐसी ही भ्रांत धारणा आगा हश्र और उनके नाटकों के सम्बन्ध में हिन्दी इतिहासकारों तथा विचारकों ने प्रचारित कर दी। उर्दू साहित्य में फिर भी उनका चर्चा सम्मान और आदर से हुआ है; उनकी रचनाओं के अध्ययन और शोध का कार्य उच्च साहित्यिक स्तर पर किया गया है। उच्च कक्षाओं में उनके नाटकों को पाठ्यक्रम में भी स्थान दिया गया है। जबकि सच्चाई यह है कि आगा हश्र सौ-फीसदी हिन्दी के लेखक और साहित्यकार हैं। उनके नाटकों का न-केवल ऐतिहासिक महत्त्व अक्षुण्ण है, अपितु साहित्यिक महत्त्व भी कम नहीं है।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में जबकि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पश्चात् और जयशंकर प्रसाद के आगमन-पूर्व हिन्दी साहित्य में नाट्य-रचना की दृष्टि से एक रिक्तता (अभाव) की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, उस समय आगा हश्र काश्मीरी ने अपने दर्जनों नाटको की रचना द्वारा द्विवेदी युग से प्रसाद-युग तक हिन्दी नाट्य साहित्य को समृद्ध करने का अत्यन्त स्तुत्य प्रयास किया।

हिन्दी साहित्य-इतिहासकार और नाट्य-समीक्षक उनके केवल चार-पांच नाटकों—विल्वमंगल सूरदास, बनदेवी, सीता बनवास, लव-कुश, भीष्म आदि—को ही बताते और गिनाते रहे हैं जो हिन्दू-धार्मिक और पौराणिक कथाप्रसगों से सम्बन्धित हैं तथा नागरी लिपि में प्रकाशित हुए हैं। पर जिन नाटकों को आग़ा हश्र ने फारसी लिपि में नाटक कम्पनियों के लिए लिखा था, उन्हें हिन्दी वालों ने उर्दू की रचनाएं मानकर हिन्दी साहित्य में स्थान नही दिया। वस्तु-तथ्य यह है कि आग़ा हश्र के 'खूबसूरत बला', 'यहूदी की लड़की', 'सैदे-हवस' (हवस का पुतला), 'आंख का नशा', 'सफेद खून', 'मधुर मुरली', 'दोरंगी दुनिया', 'भगीरथ गंगा', 'पहला प्यार', 'दिल की प्यास', 'तुर्की हूर' आदि अन्य लगभग बीस नाटक भी सौ-फीसदी हिन्दी की रचनाएं है। केवल थोडे-से उर्दू-नुमा रंग और शैली की चाशनी तथा लिपि-भेद के कारण ही हम इन रचनाओं को हिन्दी नाटक साहित्य से बाहर नही रख सकते। अतः आग़ा हश्र के समस्त कृतित्व को एक प्रबुद्ध हिन्दी नाटककार का महत्त्वपूर्ण कृतित्व मानना होगा और सच तो यह है कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के बाद आग़ा हश्र ही हिन्दी के ऐसे श्रेष्ठ नाटककार बनकर आये जिन्होंने प्रसाद-पूर्व युग तथा प्रसाद-युग मे हिन्दी नाटक साहित्य को खूब समृद्ध बनाया। काल-क्रम से आग़ा हश्र के नाटकों का विवरण यों है—

1. आफ़ताबे-मुहब्बत, सन् 1897 मे फ्रेंड्ज क्लब, बनारस के लिए रचा गया और छपा।
2. मुरीदे-शक, सन् 1899 मे एलफ्रेड कं० द्वारा खेला गया।
3. मारे-आस्तीन, सन् 1900 मे उपर्युक्त कं० द्वारा दर्शित।
4. असीरे-हिर्स, सन् 1902 में ,, ,, ,,
5. दोरंगी दुनिया (मीठी छुरी), 1904 ई०, नौरोजजी परी की कं०।
6. दामे-हुस्न, 1905 ई०, नौरोजजी परी की कं०।
7. सफेद खून, 1906 ई०, दादा भाई ठूटी की पारसी नाटक कं०।
8. सैदे-हवस, 1907 ई०, उपर्युक्त पारसी कं० मे।
9. ख्वाबे-हस्ती, 1908 ई०, न्यूअल्फ्रेड मे, 'मैकबेथ' की छाया पर रचित।

10. खूबसूरत बला, 1909 ई०, न्यू अल्फ्रेड मे ।
11. सिल्वर किंग (नेक परवीन उर्फ अछूता दामन), 1910 ई०, अपनी दी ग्रेट एल्फ्रेड थेट्रिकल कं० ।
12. यहूदी की लड़की, 1913 ई०, अपनी दूसरी कं० इण्डियन शेक्सपियर थेट्रिकल कं० ऑफ लाहौर में ।
13. बिल्वमंगल सूरदास, 1915 ई० में अपनी कम्पनी के लिए कलकत्ता में लिखा । यह उनका पहला धार्मिक नाटक है ।
14. वनदेवी, 1916 ई० में अपनी ही कम्पनी के लिए कलकत्ता में रचा । इसे ही 1920 ई० में 'भारत रमणी' नाम' से दोबारा लिखा ।
15. मधुर मुरली, 1919 ई० ।
16. भगीरथ गंगा, 1920 ई० ।
17. हिन्दुस्तान : कदीम व जदीद, 1921 ई०, पहला सामयिक राजनीतिक नाटक ।
18. तुर्की हूर, 1922 ई० ।
19. पहला प्यार (संसार-चक्र), 1923 ई०, कोरिनथियन थियेटर मे ।
20. आंख का नशा, 1924 ई०, कोरिनथियन थियेटर में ।
21. भीष्म, 1925 ई०, आग़ा हश्र ने इसकी फिल्म बनानी भी शुरू की थी ।
22. सीता-वनवास, 1928 ई० ।
23. रुस्तम-सोहराब, 1929 ई०, पारसी इम्पीरियल कं० बम्बई में ।
24. धर्मी बालक (गरीब की दुनिया), 1930 ई०, कोरिनथियन थियेटर में ।
25. भारतीय बालक (समाज का शिकार), 1931 ई०, कोरिनथियन में ।
26. दिल की प्यास, 1932 ई०, कोरिनथियन में ।

इसके अतिरिक्त आग़ा हश्र ने शीरीं-फर्हाद, औरत का प्यार, यहूदी की लड़की और चंडीदास—इन चार फिल्मों के स्क्रिप्ट भी 1932-34 के बीच तैयार किये थे । 1934 ई० में हश्र ने 'हश्र पिक्चर्स' नाम से एक अपनी फिल्म कं० स्थापित की थी । किन्तु स्वास्थ्य खराब रहने के कारण 28 अप्रैल 1935 को उनका लाहौर में देहांत हो गया । तबीयत आज़ाद पाई

थी। पर पत्नी से भी बहुत प्यार था। 1918 ई० में उनकी पत्नी का लाहौर मे देहान्त हो गया था। आग़ा हश्र ने दूसरी शादी नही की। और लाहौर में अपनी पत्नी की कब्र के साथ दफनाए गये। उनकी एकमात्र संतान दो माह का लड़का नादिर शाह 1914 ई० में गुजर गया था। उसका उन्हें बहुत सदमा पहुंचा था। इसी समय उनकी टांग टूट गई थी।

आग़ा मुहम्मद शाह 'हश्र' का जन्म 4 अप्रैल 1879 (11 रबी उस्सानी 1296 हिजरी) में बनारस मे हुआ था। आपके पिता का नाम आग़ा ग़नी शाह (पीरज़ादे) था। आरंभिक शिक्षा स्कूल में छठे दर्जे तक ही पाई थी। बालपन से ही शेर-शायरी और नाटक-तमाशों का शौक था। फारसी, अरबी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया—अनियमित रूप से ही। और अठारह साल की उम्र से ही लिखने लगे। आग़ा हश्र को अपने युग का हिन्दी-उर्दू का शेक्सपियर उचित ही कहा जा सकता है। उनके अधिकाश नाटकों में कवित्वपूर्ण काल्पनिक स्वच्छन्दता, रोमांस और सामंतीय आदर्शवाद की लगभग वैसी ही प्रवृत्ति पाई जाती है, जैसी शेक्सपियर के नाटकों में थी। बेशक, आग़ा साहब ने मूलत: नाटक कम्पनियों के लिए लिखा और इस दृष्टि से जन-रुचि का उन्हें हर समय ध्यान रहा, और शायद इसी कारण साहित्यिक प्रौढ़ता और कुशल रंग-परिकल्पना उनके नाटकों में नही आ पाई, जन-जीवन की यथार्थता खोजने वालों को भी उनमे अधिक कुछ नही मिलेगा, पर उस युग मे नाटक को साहित्यिक जन-अभिरुचि का माध्यम बनाने का जो जबरदस्त प्रयास उन्होंने किया, उसे कभी भुलाया नही जा सकता। उनके नाटक विशेषत: 'यहूदी की लड़की', 'खूबसूरत बला', 'हवस का पुतला', 'बिल्वमंगल सूरदास', 'रुस्तम-सोहराब' आदि अपनी शाश्वत थीम, संवेदनापूर्ण कथानक, कवित्वमय संवाद-शैली, महत् उद्देश्य और आद्यांत रस-संचार के कारण किसी भी भाषा के साहित्य का गौरव बढ़ाने वाले उत्कृष्ट नाटक हैं।

झारी विला, 33/1, भूलभुलैयां रोड
[illegible], नई दिल्ली-110030

—कृष्णदेव झारी

ख्वाबे-हस्ती

[जीवन-सपना]

नाटक के पात्र

पुरुष पात्र

नवाबे-आज़म : एक नवाब, सवलत का बाप, हुसना का पालक
सवलत : नवाबे-आज़म का बेटा
फ़ज़ीहता : नवाब का नौकर (सरदार), सवलत का सलाहकार
फ़ीरोज़ : हुसना का भाई
असफंदयार : फ़ीरोज़ के गिरोह का सरदार
मनवा : फ़ज़ीहता का नौकर
इनके अतिरिक्त सिपाही, जमादार, साथी, पुजारी, गुरु आदि।

स्त्री पात्र

रज़िया : नवाबे-आज़म की भतीजी।
हुसना : नवाबे-आज़म की पालिता, सवलत की प्रेमिका, फ़ीरोज़ की बहन
अब्बासी : एक बेवा औरत, सवलत पर हावी।
औरत : फ़ज़ीहता की पत्नी
इनके अलावा दासियां, सहेलियां आदि।

प्रार्थना

मालिक प्यारा ! जग सागर से तारनहारा !
सिरजनहारा ! है न्यारा !
हम हैं तुमरे द्वार आये ! तुमरे द्वार, मालिक प्यारा !
दोहा—दुख-रूपी संसार में, काम न आवे कोय ।
फंसे जो था मझधार में, पार तुम्हीं से होय ॥
सिगरो जगत निस-दिन पल-पल छिन-छिन
जपत है—दया-निधान, जिया के धाम !
तेरो ही नाम ! दाता ! मालिक······

[गाते-गाते सब जाते हैं]

पहला अंक

पहला दृश्य

[नवाबे-आजम का महल। नवाबे-आजम अत्यन्त गुस्से में भरा हुआ सबलत को बुरा-भला कह रहा है।]

नवाबे-आजम : शर्म कर ! बेइज्जती के पुतले ! शर्म कर !
शरीरों के सर से, बुरों के असर से, दग़ा से, ख़ता से, जफ़ा से भरा है।
जफ़ाकार, अय्यार, मक्कार, मूज़ी, फरिश्ते से शैतान पैदा हुआ है।
न शराफ़त की क़द्र, न लज्जा, न इज्जत का डर, न शर्म-ओ-हया है।
बुराई का बंदा, तबीयत का गंदा, न दुनिया की इज्जत, न ख़ौफ़े-खुदा है।
मेरी शान-ओ-शौकत, बुजुर्गों की इज्जत मिटी दो जहान् में तेरे शोहदेपन से।
बुराई भी कहती है तुझको, बुरा है, नदामत भी नादिम है तेरे चलन से ॥

अब्बासी : (अन्दर से आवाज देती है) बेशर्म आदमी ! (नवाबे-आजम को)

सबलत : बस जनाब बस ! इतनी सख्ती भी न कीजिए जो मुझे भी सख्त जवाब देने की जरूरत पड़े। आपकी इन बातों से

तबीयत उबलती है। याद रखिए, जब पत्थर पर पत्थर गिरता है तो दोनों से चिंगारी निकलती है—

मुझ में भी फसाहत है, हरारत है, ग़ज़ब है।
इस पर भी जो कहता नहीं कुछ, लिहाज़े-अदब है।
राहत नहीं देते तो मज़ीयत भी न दीजिए,
रख ली हैं दुआएं तो यह लानत भी न दीजिए।

नवाब : अगर लानत से इतना डरता है तो फ़ज़ीहता और अब्बासी जो जीती-जागती मानत हैं; उनसे परहेज़ क्यों नहीं करता? ये रियासत के घुन, दौलत की जोंक, सोने की हड्डी चिचोड़ने वाले कुत्ते हैं, इनसे क्यों नहीं परहेज़ करता है?

अब्बासी : (अंदर से) इन लफ़्ज़ों का बदला लिया जायगा।

नवाब : ये यहीं तक साथ देंगे जब तलक कुछ पास है।
जब तलक अहमक है तू, जिस वक्त तक ज़र पास है।
जब ख़िज़ां आई, न लेंगे नाम तेरा भूल से।
यूं जुदा हो जायेंगे जिस तरह पत्ते फूल से॥

सवलत : मेरी जिन्दगी की अगूठी जिन दो हीरों से चमक रही है, आप उन्ही को पत्थर कहकर रद्द करते हैं! माफ़ कीजिए, मालूम होता है कि आप मेरे दोस्तों की ख़ूबियां देखकर जलते हैं।

नवाब : बेवकूफ़! इनमें से एक तेरे दिल का ज़ख्म और दूसरा दाग़ है।

सवलत : जी नहीं, एक मेरी रूह, दूसरा दिमाग़ है।

नवाब : अहमक़! एक तेरी किस्मत पर तेल छिड़केगी, दूसरा आग लगायेगा।

सवलत : नहीं, एक आपकी लगाई हुई आग पर पानी छिड़केगी, और दूसरा बुझायेगा।

नवाब : मेरी सुन, मैं तेरा दोस्त हूं।

सवलत : मुझ से न कहिए, आप मेरे दुश्मन हैं।

नवाब : बेअदब ! हम तेरे बाप हैं।
सवलत : आप डसने वाले सांप हैं।
नवाब : क्या यही क़ातिल बातें सुनने के लिए हमने तुझको पाला है ?
सवलत : आपने मुझे काग़ज़ की ज़मीन पर क़लम की छुरी से हलाल कर डाला है।
नवाब : मुझसे—और यह बदकलामी ! यह बराबर का जवाब !
सवलत : तीर का है तीर और पत्थर है पत्थर का जवाब।
नवाब : सामने मेरे तुझे सब्र-ओ-तहम्मुल चाहिए।
सवलत : ग़ैरमुमकिन है कि कांटे बोये और गुल चाहिए।
नवाब : बाप—और बेटे के मुंह से बदज़बां ऐसी सुने !
सवलत : है यह गुंबद की सदा[1], जैसी कहे वैसी सुने।
नवाब : दूर हो, दूर हो ! अब मेरी आंखें तुझे गुस्से और नफ़रत से भी देखना नहीं चाहतीं हैं। जा शैतान की तरह मरदूद हो ! उसके ईमान की तरह नाबूद हो। मेरी खुशी की तरह मिटाया जाय, कांटे की तरह बढ़े, घास की तरह कटे और कूड़े-कर्कट की तरह जलाया जाय !

लालच का ग्रास, दोज़ख़ की खुराक,
काफ़िर ! बेदीन बंदा ज़र का !
दिल का ज़ख़म, बदन का फोड़ा,
जान का ग़म, नासूर जिगर का।
शराफ़त से नंगा, लानत के काबिल,
नमकहराम, बदख्वाह[2] पिदर[3] का।
दुश्मन घर का, दुश्मन ज़र का,
दुश्मन सर का, दुश्मन दर का।
किस्मत फूटे, सर पर टूटे,
मेरी लानत बनकर बिजली।

---

[1] आवाज़ 2. बुरा चाहने वाला 3. बाप

खाक हो तू और खाक ही बरसे,
दिनभर आतिश शब-भर बिजली।

[नवाब और सखावत का प्रस्थान]

अब्बासी : (आकर) 'रियासत के घुन ! दौलत की जोंक' बोलने वाले पत्थर ! इन लफ़्ज़ों का बदला लिया जायगा। तूने मौत को गालियां देकर गुस्सा दिलाया है। शेर को ठोकर मारकर जगाया है—
लूंगी अपने हाथ से तेरा-ओ-तौर से इन्तिक़ाम।
तेरे घर से तेरे जर से, तेरे सर से इन्तिक़ाम॥
गोश्त से, हड्डी से, जान से, जिस्म-ओ-सर से इन्तिक़ाम।
जान से, दम से, रूह से, दिल से, जिगर से इन्तिकाम॥
मौत लरज़े, चीख़ उठे खुद, कांपे घर-घर इन्तिक़ाम।
सातवां दोज़ख कहे, यह है बराबर इन्तिक़ाम॥

[जाती है]

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[रजिया का महल। रजिया अन्दर से गाते-गाते आती है]

रजिया : चमकत गुलकारी, महकत फुलवारी हैं, न्यारी प्यारी सिगारी क्या प्यारी-प्यारी ! चमकत गुलकारी…

दोहा : इलाही आबरू रखियो इस साफ़ दिलबर की।
कि आइंदा किसी को क्या खबर अपने मुक़द्दर की॥
डाली डाली पर कोयल काली भक्ति करे तुम्हारी।
चमकत गुलकारी…
सुभान अल्लाह ! मैं हैरान थी। या रब !
वह मजमां कहां है ? जमीन के सितारों का झुरमुट यहां है !

[सब सखियां आती हैं]

डाली : बहन, लो, मुक़द्दर ने दर्जा बढ़ाया, जरूरत थी जिस चांद की—नजर आया !

रजिया : ऐ मैं भी सुनूं, बात क्या हो रही थी ?

डाली : दुआ कर रहे थे, दुआ हो रही थी !

रजिया : दुआ ! किस गरीब के वास्ते ?

बहार : जी नहीं, एक खुशनसीब के वास्ते !

रजिया : किस खुशहाल के लिए ?

ी : आप और आपके इक़बाल के लिए।

बहार : आपके ज़र-ओ-माल के लिए।
तीसरी : आपके हुस्न-ओ-जमाल के लिए।
चौथी : क़यामत-सी चाल के लिए।
डाली : ग़जब के ख़त-ओ-ख़ाल के लिए!
बहार : फूल-से गाल के लिए!
रज़िया : माशा अल्लाह! माशा अल्ला!
तीसरी : रहे जहान् में तू रौशन माहे-जमां की तरह।
चौथी : रहे बहार तेरी बाग़े-बेख़िजां की तरह।
डाली : तू तरक्क़ी करे क़यामत की।
बहार : तेरा शबाब बढ़े उम्रे-जाविदां की तरह।

[सब मिलकर गाती हैं]

प्यारी नाज़ के भाले कर ले!
कारी नैनन के मद ले, मद के प्याले!
रंगत सुन्दरिया मोहनियां।
नज़र नज़र तू मना कटारी पूरी दुलारी मोरी।
निस दिन लगाती मन पे कांग्ह, नैनन के भाले…

रज़िया : बस, बस! मालूम हुआ कि तुम्हें दुआएं देने का खूब अभ्यास है!
डाली : ऐ हुज़ूर, बड़ी सरकार ने अपनी सारी दौलत आपके नाम लिख दी—अभी तो इसकी मुबारक कहनी बाकी है।
बहार : हां, बीबी मुबारक!
तीसरी : सरकार, मुबारक!
चौथी : हज़ूर, मुबारक!
डाली : अब तो मिठाई खिलवाइए।
बहार : अब तो इनाम दिलवाइए।
तीसरी : मैं तो हज़ार का तोड़ा लूंगी।
चौथी : और मैं तोड़े के साथ एक ज़री का जोड़ा भी लूंगी।
रज़िया : दीवानियो, यह सच है कि बेटे की नालायक हरकतें देखकर

चचा जान ने अपनी सारी दौलत मेरे नाम लिख दी है, मगर मैं वाकई ग़ैरहक़दार हूं। अगर कल ही भाई सवलत का चाल-चलन ठीक हो जाय तो मैं वसीयतनामा चाक करके उनकी दौलत उन्हें देने के लिए तैयार हूं।

डाली : जब तक अब्बासी उसकी हमदम और फज़ीहता उसका सलाहकार है उस वक्त तक सवलत का राह पर आना दुश्वार है!

बहार : हुजूर, यह मुई अब्बासी कौन है?

तीसरी : सवलत की आशना।

रज़िया : चुप बेशर्म! अब्बासी कर्नल बहराम की बीवी है। कर्नल एक दौलतमंद शख्स था। इत्तिफाक से दौलत व माल ने मुंह फेरा, मुफ़लिसी ने आन घेरा। आखिर बेचारे ने तंग आकर जहर खाकर अपनी जान गंवाई। और यह बेवफ़ा औरत दूसरे ही रोज़ भाई सवलत के साथ भाग आई!

बहार : नरक की मूरत!

तीसरी : ऐ हुजूर! कैसी खुदकुशी? मैंने तो सुना है कि इसी मुर्दार ने ज़हर देकर अपने शौहर को मारा है।

रज़िया : मुमकिन है!

बहार : उस नमकहराम नौकर फज़ीहता को देखिए न!

रज़िया : हां, देखो न, कमीने ने आठ बरस तक इसी घर का नमक खाया, दस-बारह दफ़ा चचा जान ने उसे जाल और फरेब के मुकदमों से छुड़ाया, नौकरी से अलग करने के बाद भी पांच सौ रुपया नकद अता फरमाया! अब उन एहसानों का बदला यूं उतारता है कि उन्हीं के लड़के को बिगाड़ता है!

चौथी : लानत है मुए पर!

[एक दासी आती है]

रज़िया : क्यों?

दासी : हमाम तैयार है, हुजूर ही का इन्तजार है!

[सखियाँ गाती हैं]

कामनिया ! काहे खड़ी हो, चल के करो सिंगार !
चल के करो सिंगार !
गुलाबी गाल खिले गुलजार, काहे खड़ी हो···
उमंग के संग-संग रंग छाया, रंग जमाया।
अहाहा वाह वाह ! रंगीली रसीली, नुकेली, नार नवेली
गायें हम मल्लार ! कामनिया···

[गाते-गाते सब मन्दर जाती हैं]

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[रास्ता। हुस्ना गाते हुए आती है]

हुसना : आयो है सावन मन-भावन !

मिल-मिल सखियाँ गावत हैं सब—मेघ और मल्हार !

सुर-तान से आयो है सावन मन-भावन !

ऐ खुदा, मैं दर्दमंद हूं, मुझे दवा दे ! मैं इश्क की बीमार हूं, मुझे शफा दे ! मैं मुहब्बत का जहर पी गई हूं, आबे-बका (अमृत) दे ! चमक, ऐ उम्मीद के खूबसूरत आफ़ताब, ताकि ग़म की डरावनी और लम्बी रात का सवेरा हो ! किस्मत, मेरी दुआओं पर आमीन बोल ताकि जिसकी मैं हो चुकी हूं वह भी मेरा हो ! चल हुस्ना, अपने सवलत देवता के मंदिर में चल ! उसकी चौखट पर अपनी किस्मत को आजमा ! (गाती है)

तन प्रेम की राख लगा ले तू. वहां जोगन बनकर जाना है।
जहां आज रगों के तारों पर उल्फ़त का राग सुनाना है।
ऐ आंखों की गंगा-जमना, स्वामी के पांव धुलाना है।
मन ले चल अपने दाग़ों को मोहन पर फूल चढ़ाना है।
मैं बलि-बलि जाऊं मुखड़े पर और स्वामी के उन चरणों पर।
मैं तब जानूं कि पुजारिन हूं, जब राज़ी वह गिरधारी हों॥

[गाते-गाते अंदर जाती है]

अब्बासी : (आकर) आह ! मेरे रास्ते की ठोकर यही है जो भूखे शेर के मुंह से उसका शिकार छीन लेना चाहती है ! सलतनत और उसकी दौलत को मेरे हिर्स (लोभ) के दांतों से बचाना चाहती है ! नहीं बचा सकती । जिस जमीन पर मैं चलती हूं, वह नहीं चल सकती । जिस हवा में मैं सांस लेती हूं, वह नहीं ले सकती । डर, डर ! ऐ इस शहर की सबसे ज्यादा खूबसूरत मगर ओ बेवकूफ़ औरत, अब्बासी से डर ! जिसने आजादी के लिए अपने मुफ़लिस शौहर को जहर देकर तमाम किया, क्या उसका द्वेष तुझे जलाकर खाक न करेगा ? नहीं, नहीं, छुरी का वार, रस्सी का फंदा या थोड़ा-सा जहर तेरा किस्सा भी पाक करेगा !

न हो गर यह तो मेरे खूने-दिल पीने पे लानत हूं !
मेरे गुस्से पे लानत हूं, मेरे कीने पे लानत हूं ! !
क़ातिल हूं मैं कीनावर, जल्लाद, बेदाव ।
तेग गले चला दूं, इक तूफान मचा दूं ।
लाखों के खून बहा दूं, अदम की राह दिखा दूं ।
खंजर-नश्तर, खुदसर हमदम झुकते हैं मेरे सामने ।
सिदके हैं जान-ओ-दिल, सूरज भी रौशन मुझसे ।
जालिम भी हूं, शैतान भी हूं, क़ातिल हूं !

[पटाक्षेप]

चौथा दृश्य

[स्थान : संवलत की ऐशगाह (विलास-भवन)। सखियाँ नाचती-गाती हैं।]

सरदारी पावे साक़ी, पिला कोई प्याला!
झूमत आवे मतवाला, निराला दे प्याला! सरदारी···
तसद्दुक़ कमसिनी का, वास्ता जोशे-जवानी का,
पुढ़ा दे साक़िया, कनस्तर शराबे-अर्ग़वानी का।
इलाही, रातदिन छूटा करें सोहबा के फ़व्वारे।
रियाज़े-दहर से उठ जाय इस्तैमाल पानी का।
दिल की कली खिले, रंगे-जवानी रंग से उमग से दिखला,
मौज करे पीने वाला! गुललाला, दे प्याला!
सरदारी पावे साक़ी···

मुसाहिब : क्या देर है ऐ साक़ी, गुल-फ़ाम, छका दे।
साग़र नहीं मिलता है तो चुल्लू से पिला दे।
या रब, तेरे कौसर में न तेज़ी है, न मस्ती।
हमको जो पिलानी है तो दुनिया से मंगा दे।
सरदारी पावे साक़ी···

[सखियाँ गाती-गाती अंदर जाती हैं]

संवलत : पीओ ऐ गुलबदन, गुलफ़ाम, गुलअंदाम, गुलपैकर।
मये-गुल रंग नीरंग गुल-ओ-रंग गुलपरवर!

मुसाहिब : भाई फ़जीहता!

फजीहता : हां, भाई घसीटा !
मुसाहिब : दमे-बादाकशी कुछ नाच-गाना हो तो बेहतर है।
चमने-बेबुलबुल, नग्रमासरा सहरा से बदतर है।

[दो रण्डियां आकर नाच-गान शुरू करती हैं]

हम से करके बहाना यार,
सौतन घर जाते हो !
जाओ, जाओ, मुझे न सताओ
जाओ जाओ, मुझे न सताओ !
कसम क्यों झूठी खाते हो! हमसे करके···
ताक-ताक मारे तोरी तिरछी-नजरिया,
जुल्मी नजर की कटरिया।
आंखों में टोना, निगाहों में जादू,
प्यारी की बाली उमरिया।
जिया तरसे, बदरिया बरसे,
सांवरिया क्यों तरसाते हो! हमसे करके···

[रण्डियां जाती हैं। सामने से हुसना आती है]

फजीहता : (हुसना को आते देखकर) आ रही है!
सवलत : काठ की पुतली।
अब्बासी : जो हिमाकत के पेट से पैदा हुई!
फजीहता : बेवकूफी के दूध से पली!
अब्बासी : और जवान होकर इश्क के मर्ज से अंधी हो गई।
सवलत : आ रही है!

[फजीहता, अब्बासी और मुसाहिबों का प्रस्थान, हुसना का प्रवेश]

हुसना : यही है मेरी खुशी, यही है, मेरी खुशी की दुनिया यही है।
मेरी दुनिया की रौशनी यही है—

महफ़िले-हस्ती में शमआ-ए-अंजमनआरा हूं यह।
बेकसी की रात में उम्मीद का तारा हूं यह!
आरज़ू की आंख की पुतली, तमन्नाओं की जान,
प्यार भी करता हूं जिसको प्यार, वह प्यारा हूं यह!

सवलत : मुहब्बत! ग़लत···कुछ नहीं···कहीं नहीं। लोगों के दिमाग़ में फ़तूर हुआ है! मुहब्बत का नाम केवल शायरों की बदौलत जिन्हें गुल-ओ-बुलबुल का दलाल कहना चाहिए—दुनिया में मशहूर हुआ है!

हुसना : मेरे अल्लाह!, यह क्या कहता है! कुछ मेरी समझ में नहीं आता है! मेरी तरफ़ से बदगुमान है, जो ऐसा बयान है!

सवलत : मतलब की दोस्ती हूं, मतलब की सब वफ़ा हूं।
मतलब के सब हैं बंदे, मतलब फ़क़त ख़ुदा है।
उल्फ़त है काम दिल का और दिल के हर्फ़ दो हैं।
इनमें भी है यह नफ़रत, एक एक से जुदा हैं।

हुसना : नहीं, ये लफ़्ज़ ज़बान पर न लाओ! अच्छे सवलत, तमाम दुनिया पर इल्ज़ाम न लगाओ! एक बावफ़ा का दिल न दुखाओ—
सभी यकसां नहीं, नाअहल भी, माक़ूल भी हैं।
बाग़ में हज़ार हैं गर ख़ार तो दो फूल भी हैं॥

सवलत : हसीन हुसना, तू भोली-भाली है। यह दुनिया फ़रेब का नक्कारा है जो शोर बहुत करता है लेकिन अंदर से खाली है।

हुसना : मेरे आफ़ताब! आप अंधेरे में हैं। कुदरत ने मुहब्बत ही की ज़मीन पर यह दुनिया का महल उठाया है। ख़ुदा ने आग, पानी, मिट्टी, हवा इन सब को मुहब्बत के पानी में गूंध कर यह मकान बनाया है—
बुलबुल निसार होता है गुलहाए-बाग़ पर।
परवाना जान देता है जलकर चिराग़ पर।
दुनिया के ज़र्रे-ज़र्रे में उल्फ़त की लाग है।
पत्थर के भी जिगर में मुहब्बत की आग है!

सवलत : हां, अगर नहीं है तो मेरे बेदर्द बाप के दिल में नहीं—उस बानी-ए-जफा के दिल में नहीं।

हुसना : मेरे सवलत, प्यारे सवलत !

सवलत : हुसना, क्या दुनिया ऐसे को अच्छा बाप कहेगी जो बेटे के हक़ में ऐसी बेईमानी करे !

हुसना : सवलत, क्या दुनिया ऐसे को अच्छा बेटा कहेगी जो अपने बाप के हक में ऐसी बदज़बानी करे, नाफरमानी करे !

सवलत : जिसका दिल जलता है, उसके मुंह से ऐसा ही कल्मा *निकलता है।*

हुसना : नहीं, यह बुरों की खसलत है। अच्छों की ज़बान पर हमेशा अच्छी बात आती है। सांप दूध पीता है और ज़हर उगलता है, गाय घास खाती है और सबको दूध पिलाती है।

सवलत : हुसना, ग़ौर कर, आदमी के मुकाबले में हैवान की मिसाल देना किस कदर वाहियात बात है !

हुसना : और सवलत, तुम भी ग़ौर करो, जो काम हैवान नहीं करता वह काम इन्सान करे तो कितनी शर्म की बात है !

सवलत : मेरी रूह, मेरी क़िस्मत की तरह तू भी मुझसे जगं करती है !

हुसना : मेरे सवलत, हुसना तुम से नहीं, तुम्हारी बदी से डरती है।

सवलत : अच्छा कहेगा कौन उसे इस दशा के बाद !

हुसना : दुनिया में बाप-मां का है दरजा खुदा के बाद !

सवलत : हुसना, हुसना !—

बयां नहीं है वह, सोज़े-निहां[1] निकलता है।
जिगर की आग का मुंह से धुआं निकलता है।

हुसना : सवलत, सवलत !

हया सीखो, अदब बरतो, बचो आतिशबयानी से।
बुझा दो इस बदी की आग को नेकी के पानी से।

1. छिपा हुआ दुख।

सवलत : जिसको दवा समझते थे, वह दर्द हो गया !
 बस, जाओ, जाओ तुम से भी दिल सर्द हो गया।

हुसना : बेसबब नाराज़ी !

सवलत : बस रहने दो सफ़ाई।

हुसना : मेरी तकदीर !

सवलत : मेरी तक़सीर !—
 सब हैं सताने वाले, ग़म के बढ़ाने वाले।
 दिल के जलाने वाले, चरके लगाने वाले।
 क़िस्मत के ज़ख्मियों का हमदम नहीं है कोई।
 नश्तर तो सैकड़ों हैं, मरहम नहीं है कोई।

हुसना : जान-ओ-जहान फेंक दूं तुम पर से वार के।
 क़दमों के आगे डाल दूं यह सर उतार के।
 आँखें निकाल दूं मैं, इशारा अगर मिले,
 पी जाऊं ज़हर, हुक्म तुम्हारा अगर मिले।

सवलत : ओ ! चुप रहो ! सबको जबानी दावा होता है, कौन किसी के लिए जान खोता है !—
 मुश्किल है साथ दे कोई हाले-तबाह में।
 साया भी छोड़ जाता है, रोज़े-सियाह में।

हुसना : सवलत, मेरा इश्क़ वफ़ादार है।

सवलत : मेरी हुसना, यह दुश्वार है।

हुसना : सवलत, मुझे आज़माओ।

सवलत : हुसना, तुम मोम हो, मुहब्बत की आग के सामने मत आओ।

हुसना : मैं फिर कहती हूं, मुझे साबित करने का मौका दो।

सवलत : अच्छा, तो यह जाली वसीयतनामा है, इसे तिजोरी में रखकर असली वसीयतनामा मेरे बाप की तिजोरी से चुरा ला !—
 कसौटी अब बता देगी कि क्या-क्या तुझ से होना है।
 यह चमकीला सुनहरा इश्क़ पीतल है कि सोना है !

हुसना : ओ खुदा ! यह तू मुझे चोरी करने के लिए कहता है !
नहीं, नहीं, सवलत, तूने मुझे क्या समझा है ?

सवलत : *अपनी ज़िंदगी, अपनी जान, अपनी रूह !*

हुसना : क्या यह शर्म और अफसोस की बात नहीं है कि जिसे तुम अपनी रूह समझते हो, उसी को जहन्नम में गिराने के लिए तैयार हो ?

सवलत : सर्द हो गई ! ज़र्द हो गई ! इश्क का बुखार उतर गया ! मुहब्बत का जोश उड़ गया—

राहे-वफ़ा में दो ही क़दम चल के गिर गई !
क्या जान देगी तू, जो ज़बान दे के फिर गई !

हुसना : ज़बाँ दी थी कि तुम पर जान दूंगी, जान हाज़िर है।
कहा था, सर कटाऊंगी, यह सर इस आन हाज़िर है।

मेरी दौलत, मुहब्बत, जान-ओ-दिल सब कुछ तुम्हारा है।
न दूंगी मैं मगर ईमान, यह इन सबसे प्यारा है।

सवलत : आह ! किस्मत ! किस्मत ! उम्मीद की रोशनी भी मुझे रास्ता नहीं दिखाती है !

हुसना : खुदा तुझे नेक रास्ता दिखाए, अपने नेक बंदों की सोहबत में लाए !

सवलत : खुदा मुझ बदबख्त के लिए तुझे रहमदिल बनाए !

हुसना : सवलत, यह गुनाह है, इसीलिए तबीअत झिझकती है।

सवलत : *हुसना, मुहब्बत अंधी है, इसलिए गुनाह नहीं देख सकती है।*

हुसना : मैं क्या करूं ? कुछ समझ मे नहीं आता है।

सवलत : हुसना, अच्छी हुसना•••

हुसना : आह ! ठहरो, तुम्हारा इश्क मेरे ईमान से लड़ता है।

सवलत : खुदा करे, वह फतहयाब (विजयी) हो।

हुसना : ओ मुहब्बत, तू खराब हो।

सवलत : दिलआरा !

हुमना : दिलहारा !
सवलत : फिर ?

[दोनों जाते हैं । फजीहता आता है].

फजीहता : वह मारा !

[पटाक्षेप]

पांचवां दृश्य

[स्थान : रजिया का महल। सहेलियों का नाचना और मिलकर गाना]

क्या बहार छाई ! देखो फूला हरियाला जी !
डाली-डाली पर खिलियां जूही, चम्पई कलियां
बन भी चमन बन गया है रंगतवाला जी !
हरी-हरी डालियां जी मनहर डालियां
बोलत पपीहरा, लुभावत है जियरा !

रजिया : दिल पे सदा गुल की है अदा !

सब : आओ प्यारी गायें, फूला है हरियाला जी !
क्या बहार छाई···

रजिया : बहार !

बहार : सरकार !

रजिया : डाली !

डाली : हजूरे-आली !

रजिया : हवा है मस्त, क़ुमरी गा रही है, फूल हंसते हैं।
घटा छाई हुई है, हर तरफ़ मोती बरसते हैं।
चलो गुलशन को लुत्फ़े-सब्जा-ओ-गुल-याद करता है

[हिचकी आती है]

डाली : कोई बुलबुल याद करता है !

बहार : हां, हां, हजूर जरूर जाइए। इससे तबीअत को भी ताजगी

होगी और बाग की भी सरफराजी होगी !

डाली : मगर बी ! तुम क्यों आती हो ?

बहार : और बी, तुम क्यों साथ जाती हो ?

डाली : मैं बांकपन के नाज़ से तिनके-सरू को चाल सिखाऊंगी।

बहार : मैं इन गालों की लाली से लाले पर रंग जमाऊंगी।

डाली : मैं मिस्सी मल कर होठों पर बी, सोसन को शरमाऊंगी।

बहार : मैं डोरा भर कर काजल का नरगिस से आंख लड़ाऊंगी।

डाली : मैं ऐसा ठाठ बनाऊंगी, गुलशन सारा तसलीम करे।

बहार : मैं ऐसी शान से जाऊंगी, हर गुल झुककर ताज़ीम करे।

रज़िया : निगोड़ियो, चलो तो सही ! घर ही में बुल-ओ-गुलजार से ठठा ! वही मसल हुई—घर में सूत न कपास, कोली से लट्ठम-लठा !

डाली : मैं सदके गई—

आराम दिल को दीजिए, राहत दिमाग़ को।
जम-जम से आप जाइए गुल-गश्ते-बाग़ को।
गुस्ताखियां मगर न करे कोई भूल के।
बुलबुल न मुंह को चूम ले धोखे में फूल के !

रज़िया : चल बलाला ! शैतान की खाला ! खबरदार ! जो ऐसा लफ़्ज़ जबान से निकाला ! मुए बुलबुल को अपनी एड़ी-चोटी पर वारूं ! ऐसी बेबाकी दिखाए, तो एक-एक फूल के सामने बिठाके सौ-सौ जूतियां मारूं !

बहार : ऐ हजूर, एक दफ़ा इसे काले कव्वे ने चूमा था, इसलिए आपको बुलबुल से डराती है !

डाली : चल मुई ! अपना ऐब दूसरों के सर चिपकाती है !

बहार : देखा हज़ूर, सच्ची बात से कैसी आग लग उठी !

डाली : लो यह दिया-सलाई की पेटी भी सुलग उठी !

बहार : मुई, जली हुई फुलझड़ी ! कव्वे के नाम पर सूखे हुए कोयले की तरह क्यों चटकती है ?

डाली : मुई खुशामदी मैना ! तू दुमकटी गलहरी की तरह क्यों

उछलती है ?—
जिस जा देखा, कुछ हरियाला, जिस जा पाया कुछ गुललाला।
हाथ में लेकर भीख का प्याला, बैठ गई और बोलीं लाला !

तीसरी : चल लाला ! देख की खाला ! मुह पर उजाला, पेट मे काला !

बहार : हम सब से भी बुरा बाला !

चौथी : गुड़ खाले और गरम मसाला !

डाली : आग लगे इस ठठे को ! बस छोड़ो, चंदी जाती है।

रज़िया : हे हे ! बुआ ! इतना गुस्सा !

बहार : ऐ बीबी, इतराती है !

रज़िया : क्या झुंझला गई ?

तीसरी : नहीं हुजूर, घबरा गई।

चौथी : जी नही, बौखला गई।

तीसरी : नहीं जी, शर्मा गई।

रज़िया : बेगम, जबान तो खोलो।

बहार : मियाँमिट्ठू ! मुंह से तो बोलो !

चौथी : हलवा चाहिए कि बोटी ?

बहार : पैसा मांगती है कि रोटी ?

रज़िया : बस, बस, तुम शरीरों ने भी गरीब को ज़रा-सी चूक होने पर नक्कू बना डाला !

डाली : देखिए न हजूर, लौंडी ने कौन-सी बुरी बात कही ! माना कि बुलबुल से भूल हुई तो आप उसी पर गुस्सा निकालिएगा, लेकिन खुदा रखे, चार दिन के बाद चाँद-सा दूल्हा आयेगा तो क्या उसके होंठों पर भी ताला डालिएगा !

रज़िया : क्यों गुंवानी, फिर वही छेड़खानी ! —
कौन बांधे अपनी क़िस्मत पैर को तक़दीर से।
मैं तो कोसों भागती हूं, क़ैदे-बे-जंजीर से॥
शाद हूं इस हाल में मुझ को नहीं शादी पसंद।
गुलशने-दुनिया में हूं मैं सर्व-ए-आजादी पसंद॥

[सब सखियाँ मिलकर गाती हैं]

आये आये श्यामसुन्दर !
सैयां बलि-जैयां, मनहरवा, मैं बैयां गरवा तोहे डालूं ।
दिल जो किसी से लगायेंगे—हे री गोइयाँ, दिल जो किसी से लगायेंगे
नाहक के सदमे उठायेंगे—हे री गोइयाँ, नाहक के सदमे उठायेंगे।
आज जिनकी आँखों में जादू भरा है
कल वही आँखें दिखायेंगे-हेरी गोइयां नाहक के सदमे उठायेंगे।

डाली : चल नटखट ! खोटी ! समझ की मोटी ! तबीअत की छोटी, ज्यादा सतायेगी तो काट लूंगी नाक और चोटी !

बहार : ओ हां ! औरत है या शैतान की खाला ! मिले दिलवर दिलआरा, मिले प्यारी को प्यारा, चंदर से तारा !
आये आये श्यामसुन्दर !

डाली : अच्छी औरत बगैर मर्द के और मर्द बगैर औरत के कभी इस मुसीबत-भरी दुनिया में आराम नहीं पाता है। अकेला पहिया गिर पड़ता है और गाड़ी में दूसरे के साथ मिलकर मनों बोझ उठा ले जाता है।

रजिया : मर्द हमेशा हकूमत जताते हैं।

डाली : और उम्रभर गुलामी भी कर दिखाते हैं।

रजिया : मामूली-मामूली बात पर दबाते हैं।

डाली : फिजूल से फिजूल नाज भी उठाते हैं।

रजिया : जरा-से कसूर पर दीदे दिखाते हैं।

डाली : और जरा-से इशारे पर आँखें भी बिछाते हैं।

रजिया : बीवी को घर में बंद करके खुद बाहर गुलछर्रे उड़ाते हैं।

बहार : हजूर, यह तो ओल्ड फैशन वालों का दस्तूर है। हमें तो आपको किसी न्यू लाइट जेंटलमैन से ब्याहना मंजूर है।

रजिया : भई, मेरा तो शादी के नाम से दिल जलता है।

बहार : तो दिल क्यों जलाइए ? शादी का सोडा और निकाह की
रसभरी खाइए ।

[सब मिलकर गाती हैं]

तेरे दिल की लगी को बुझा दें ।
मेरी जान, कोई मिला दें बांका-सांवरिया
हां मिला दें बांका-सांवरिया !

रज़िया : चलो चंचल, छबीली, रोको ज़बान !

सब : तेरे दिल को मिले दिलबर, दिलआरा, प्यारों का प्यारा !
बांकी दुल्हनिया बनो मोरी जनिया !
सांवरे-सलोने पे वारो तुम जान ! बन ठन के, प्यारी
सांवरिया

तेरे दिल को...

[सब गाते-गाते जाती हैं]

[पटाक्षेप]

छठा दृश्य

[स्थान: नवाबे-आज़म की ख्वाबगाह (शयन-कक्ष)। नवाबे-आज़म सोते हुए दिखाई दे रहे हैं। हुसना एक हाथ में फानूस लिए चुपचाप आती है। वह तिजोरी को खोलती है और जाली वसीयतनामा तिजोरी में रखकर असली वसीयतनामा चुरा ले जाती है]

[पटाक्षेप]

सातवां दृश्य

[स्थान : फजीहता का मकान। फजीहता का नौकर मनवा अन्दर से गाता हुआ आता है]

नशेबाज से कोई मत कीजो रे झमेला ! नशेबाज अलबेला !
मेरे प्यारे से कोई मत कीजो रे झमेला !
भंगड़ी कहे था, आज पी नहीं भंग ।
चल तकिये में तू यार यार के संग।
पीकर भंग मचेगी जंग, कौन गुरु का चेला !
मेरे प्यारे से कोई मत कीजो रे झमेला ! ...

[गाते-गाते अन्दर जाता है। फजीहता की औरत का प्रवेश]

औरत : तौबा, तौबा ! मुए नौकरों ने तो मुझे परेशान कर रखा है ! बगैर घुड़की-झिड़की, लात-जूते के कोई काम ही नहीं करता ! मनवा ! ओ मुए मनवा ! अरे मुए ! जवाब तो दे ! ऊंघ गया ? क्या सांप सूंघ गया ?

मनवा : सरकार ! हाजिर हूं मैं सरकार, हाजिर हूं मैं।

औरत : अरे ओ कामचोर, हरामखोर, मरदूद, काफिर, पाजी ! तीन आवाजों पर एक जवाब ! तेरा खाना-खराब ! क्या तू नादिरशाह का पोता है या बहादुरशाह का नवासा है ?

मनवा : हुजूर, आप तो मुफ्त में खफा होती हैं, नाहक़ गालियां देती हैं !

औरत : अरे मूए ! बदज़ात ! कमओक़ात ! हम मुफ़्त खफ़ा होते हैं ? क्या तू तनख्वाह नहीं पाता, तनखाह ?

मनवा : क्या मैं आपसे गालियां खाने की तनखाह पाता हूं ? मैंने हाथ बेचा है या ज़ात ?

औरत : हाय, हाय ! जी चाहता है कि मूए को फांसी पर लगा दूं, फांसी पर !

मनवा : आहा ! अब मैं समझा कि शायद हाई कोर्ट के अख्तियारात भी आप दहेज में साथ लाई हैं !

औरत : अरे मूए, गुस्ताख ! फिर खुजलाया तेरा सर ! जूते से करूं तेरी मरम्मत ! (मारना चाहती है)

मनवा : खबरदार ! ठहरना, कदम आगे बढ़ाया तो तुम जान लेना ! ज़बान संभालो, अपनी नौकरी भाड़ में डालो ! (चला जाता है)

औरत : (स्वगत) मूए हरामखोर नौकरों पर इसी तरह रौब-दाब कायम रखना चाहिए बल्कि नौकरों पर ही क्या, सब मर्दों से इसी तरह पेश आना चाहिए वरना मर्द की ज़ात, ज़रा-सा मुंह लगाने से सर चढ़ जाती है ! औरतों को चाहिए कि मर्दों की डोर ढीली न छोड़ें, उनसे ज़रा भी दब कर न रहें क्योंकि औरतों को खुदा ने अपने हाथ से बनाया है और मर्दों को ठेके पर बनवाया है। मर्दों का फ़र्ज़ है, औरतों की खिदमत करना, खाना पकाना, बिस्तर बिछाना, पांव दबाना, हुक्का भरना, ताबेदारी करना, हां में हां मिलाना ! क्यों ठीक है न ?

[औरत चली जाती है। दूसरी तरफ़ अन्दर से फज़ीहता आता है]

फज़ीहता : आदाब अर्ज़ कीजे, फज़ीहता भी आ गए ! कहते हैं जिसको चर्ख़ में फितना भी आ गए ! लोग कहते हैं कि बेईमानी न करो। अरे भाई, बेईमानी न करें तो भूखे मरें ? खुदा बख्शे,

हमारे अब्बा जान—जन्नतमकान बात-बात पर कहा करते थे, बेटा, तू ईमानदार रहेगा तो भूखा मरेगा और बेईमानी के गुबारे उड़ायेगा तो तर नवाले खायेगा। अगर हलाल की कमाई चाहेगा तो हराम की मौत मारा जायेगा! क्या करूँ, ऐसा काम करने को जी तो नहीं चाहता है मगर बुजुर्गों की नसीहत पर अमल करना ऐन अक्लमंदी है, इसलिए हमने भी यही सबक़ याद कर लिया है—

ऐ अमानत बर तव लानत अज तव रंजे याफ़्तम।
ऐ खयानत बर तव रहमत अज तव गंजे याफ़्तम![1]

झूठा नोट बनाना मुझे याद है, सिक्का ढालने में बंदा उस्ताद है। अभी-अभी जाली वसीयतनामा बनाकर सवलत को दिया है। यक़ीन है कि हुसना की मारफत उसे बदलवायेगा और कल माल-दौलत का मालिक बन जायेगा। क्या शक है कि हर बात में होशियार हूं, हरफन मौला! मगर एक औरत के हाथ से लाचार हूं। अरे मारो! अंधेर है न कि जो हज़ारों आदमियों को उंगलियों पर नचाये, वह अपनी सगी जोरू से मात खाये! मैंने बहुत-से लोगों को बड़े घर पहुंचाया है और यह मुझे खुदा के घर पहुंचाना चाहती है! देखिए, तक़दीर क्या दिखाती है! मनवा! ओ मनवा! मनवा! मनवा!

(पुकारता है)

मनवा : (आकर) सरकार, हाज़िर हूं, सरकार, हाज़िर हूं।

फ़जीहता : अरे, यह तो बता कि आजकल हमारी बीवी के मिज़ाज का थर्मामीटर कितनी डिग्री पर रहता है?

मनवा : सरकार, उनका मिज़ाज तो हमेशा अकड़ा ही रहता है। आज वह गालियों का तार बांधा कि अलामां! मेरा जी तो ऐसी नौकरी से बिल्कुल बेज़ार है!

1. ऐ अमानत (ईमानदारी) तुझ पर लानत है, तुझ से मुझे दुख ही मिले। ऐ खयानत तुझ पर रहमत है, तुमसे मुझे खज़ाने मिले!

फजीहता : अरे ठहर जा भाई, क्यों घबराता है ? मैं इस शैतानजादी को अभी-अभी ठीक किये देता हूं। मुझे उमीद थी कि समझाने से समझ जायेगी लेकिन लोहे से नरमी और बरफ़ से गरमी की उमीद फिजूल है। मगर देख, तू अब यह काम करना। [मनवा के कान में कुछ कहता है। तभी औरत आ जाती है]

औरत : क्यों जी, यह क्या कानाफूसी हो रही है···?

फ़जीहता : जी, कुछ नहीं।

औरत : (मुंह चिढ़ाकर) जी, कुछ नही ! देखो, मैं तुम दोनो के अच्छी तरह कान खोले देती हूं कि मेरे घर में आइन्दा इस तरह की खुसरफ़ुसर न होने पाये !

फ़जीहता : खुसर-फुसर तो नहीं, कोई सलाह-मश्वरे की बात कर रहे थे।

औरत : मश्वरा बीवी से करते हैं या खिदमतगार से ? दो कौड़ी के हाजी को यार-ग़ार बनाओगे तो खता खाओगे। जूतियां मारकर निकालो, मूए कुत्ते के मुह पर खाक डालो।

मनवा : अरी कटखनी कुतिया, भौंके जाती है और मुझे कुत्ता बताती है !

औरत : मूए, हरामखोर, पाजी, शैतान, बेईमान, ऐड़ी-चोटी पर तुझे करूं कुर्बान ! अपने घर जा, अपनी अम्मा-बहनों को सता। (फजीहता से) अरे मूए, मरदूद निखट्टू, भाड़े के टट्टू, खड़ा-खड़ा सुनता है और कुछ नहीं बोलता ?

फजीहता : ओ खुदा, ओ खुदा, जो लोग मेरी हालत को देखकर हसते हैं, खुदा करे, उनकी बीवियां भी ऐसी हो जायें ! (औरत से) चलो, इन बातों को छोड़ो, नौकर से सर न फोड़ो।

औरत : चल मूए भालू, शैतान का खालू ! टुकर-टुकर देखता है और मुंह से कुछ नहीं बोलता !

फजीहता : मैं क्या बोलूं, अपना सर ?

औरत : तू सुनता नहीं, बुड्ढे खडूस !

फजीहता : क्या है बीवी फानूस ?

औरत : मूए बेहया ! यह क्या हो रहा है ?
फजीहता : मेरी इज्जत का नीलाम !
मनवा : जो बोए, सो पाये !
औरत : हत्त ! तुझे खुदा खाक में मिलाए।
मनवा : देखो, सरकार !
औरत : हत तेरी सरकार पर खुदा की मार !
फजीहता : हैं ! यह क्या ? मनवा की खता और हम को सजा !
औरत : चल मुए मशालची ! एक मदारी, दूसरा डफलची !
फजीहता : तुम तो यूं ही खाली-खली खफ़ा होती हो !
औरत : बेटा, खाली-भरी के भरोसे न रहना, मारे जूतों के भेजा सहला दूंगी ! मियां और नौकर दोनों को सजा दूंगी ! मूए को देखो तो सही, न सूरत, न शक्ल। भाड़ में से निकला, खुदा तुझे गारत करे, नेस्त-नाबूद करे। इलाही ! मुझ को रांड करदे रांड !
फजीहता : ठहर तो सही, तेरे रांड होने से पहले मैं रण्डवा होता हूं ! अच्छा अब कसूर माफ कर डालो।
औरत : नहीं, कभी नहीं। इसको अभी मेरे घर से निकालो !
मनवा : कुतिया, तेरे बाप का घर है जो भौंके जाती है कि इसको निकाल दो, उसको निकाल दो !
औरत : देखो-देखो, मुआ, क्या बकता है ?
फजीहता : बच्चा मनवा, तू बहुत सर चढ गया है ! मुंह लगाया तो साथ खाने लगा। अब के तूने चूं भी की तो तू फौरन निकाल दिया जाएगा। समझा हरामखोर, पाजी, नमकहराम, शैतान, लुच्चा, गुण्डा, बदमाश, मुंहजोर, बदलगाम, सूरतहराम, हमारी इकलौती बीवी के मुंह लगता है ! तू जानता नहीं, हमारी बीवी क्या है ? लक्ष्मी का अवतार है। जब से इसका कदम घर में आया है, सारा मुहल्ला बर्बाद—आबाद हो गया है और घर की सफ़ाई दिन-ब-दिन तरक्की पर है। (औरत से) बस प्यारी, अब तो खूब धमकाया ! अब तुम भी गुस्से को

थूक दो।

औरत : तो देखो, इसको आठ दिन के अंदर ही अंदर मेरे घर से बाहर निकाल दिया जाय !

फजीहता : अजी, अल्लाह, अल्लाह करो ! आठ दिन किसके ? खुदा ने चाहा, अभी फैसला हो जायगा, मेरा दम भी इससे नाक में आया है। जब तक यह बला यहां से न जायगी, मुझे भी कल न आयेगी ! जरा ठहर तो सही, घड़ी में घड़ियाल हुआ चाहता है।

औरत : हां, खूब याद आया, वह मेरा हार ?

फजीहता : वह तो बिल्कुल तैयार है।

औरत : तैयार है तो कब लाओगे ? या यूं ही बेपर की उड़ाओगे ? आज से कल, कल से परसों, यूं ही गुजारे जाओगे बरसों।

फजीहता : प्यारी, खुदा जाने, मुझे तो रात-दिन तेरे हार ही की फिक्र रहती है।

औरत : तुम तो हर रोज टाला करते हो। मेरा तुम पर जोर है, मैं तो अभी मंगाऊंगी वरना मजा चखाऊंगी।

फजीहता : हां, हां, अभी ले आऊंगा। देखो, इसी वास्ते तो मैंने पांच सौ रुपये का नोट तैयार कर रखा है।

औरत : देखूं, देखूं, वह नोट मैं देखूं।

फजीहता : यह लो, खूब देखो ! (नोट देता है) क्यों जी, पेट भर के देख चुकीं ? चलो, अब इधर लाओ, ज्यादा न सताओ !

औरत : जी, बस जाओ ! खारे पानी से मुंह धो आओ ! बंदी ऐसी भोली-भाली नहीं जो आया हुआ नोट खोयेगी।

फजीहता : (स्वगत) जभी तो अपनी किस्मत को रोयेगी !

औरत : अब तो बंदी जायगी और सुनार से हार लायेगी।

फजीहता : देखो, यह बात अच्छी नहीं, धोखा खायेगी।

औरत : अजी जाओ, यह डरावा किसी और को बताओ। मैं अभी जाती हूं और हार लेकर आती हूं। (नोट लेकर चली जाती है)

फजीहता : बेशक, हार तो तेरी किस्मत में है ! क्यों बेटा मनवा ! कुछ ख्याल में आया कि उस्ताद ने क्या रंग जमाया !

मनवा : अजी, आप तो खुद जोरू के हाथ बिके हुए मालूम होते हैं।

फजीहता : क्यों ?

मनवा : वह क़ीमती नोट आपने उसको दे दिया !

फजीहता : तो फिर क्या करता ?

मनवा : आप तो कहते थे कि मैं उसके निकालने की फिक्र में लगा हुआ हूं और आपने तो उल्टा झट-से पांच सौ रुपये का नोट उसको निकाल कर दे दिया !

फजीहता : बेटा, तू नादान है। अगर मैं वह नोट न निकालता तो वह भी यहां से न निकलती। उस नोट को उसका रुख़सताना समझो ! क्यों कुछ समझा ?

मनवा : मेरी तो खाक भी समझ में न आया !

फजीहता : अच्छा बेटा, यह बाद में समझाऊंगा। जा बाज़ार से एक पान बनवा के ला।

[मनवा जाता है पर फौरन ही घबराया हुआ आता है]

मनवा : अजी मियां, ग़ज़ब हो गया !

फजीहता : क्या हो गया ?

मनवा : पुलिस के जवान इधर आ रहे हैं।

फजीहता : आते होंगे, रास्ता क्या हमारे बाप का है ?

मनवा : मगर हज़ूर, आपकी बीवी उनके साथ है।

फजीहता : साथ है तो तीर निशाने पर पड़ गया ! और मूंठ भी जल गई ! यारों का एक फिकरा उसे बड़े घर पहुंचाने को काफ़ी है। बेटा मनवा, अब मेरी हां में हां मिलाते जाना।

मनवा : बहुत खूब।

[पुलिस फजीहता की औरत को गिरफ्तार किए लाती है]

औरत : लो साहब, इनसे पूछ लो, यह नोट किसका है ?
जमादार : क्यों जी, यह नोट तुम्हारा है ? (तीन बार पूछता है)
फजीहता : जी होंठ ! होंठ सर्दी के मारे फट गए हैं।
जमादार : तुम पागल हो गये हो ? हम पूछते हैं, यह नोट तुम्हारा है ?
फजीहता : हजूर, आप मुझ से दिल्लगी करते हैं ! मैं जानता हूं, शायद आप मेरा इम्तिहान लेते हैं ! साहब, अगरचे मैं गरीब आदमी हूं मगर किसी का हराम का माल नही लेना चाहता हूं। क्यों बेटा मनवा ?
मनवा : जी बजा है क़िबला !
औरत : अरे ग़जब ! अभी-अभी तुम ने मुझे यह नोट नही दिया ?
फजीहता : जमादार साहब, यह औरत क्या कहती है ?
औरत : मज़ाक जाने दो, दिल्लगी हो चुकी !
फजीहता : अरी माई, हम दिल्लगी क्यों करने लगे ? परायी औरत को तो हम अपनी माँ-बहन समझते हैं। क्यो बेटा मनवा ?
मनवा : जी, बजा है।
औरत : तुम तो ऐसी बातें करते हो, जैसे तुम मुझ को जानते ही नही !
फजीहता : आपको पहले मैंने कभी देखा ही नही।
मनवा : हजूर, शायद कही मेले-ठेले मे देखा हो !
जमादार : यह औरत जाली नोट बाजार मे चलाने के लिए लाई थी इसलिए सरकार की मुजरिम करार पाई गई है।
फजीहता : अर र र ! क्यों जाली नोट ! ऐसी-ऐसी दगाबाजियां दुनिया मे होने लगी जो औरतें भी ऐसे-ऐसे काम करने लगीं !
मनवा : जी हां, आप जैसे ईमानदार आदमी थोड़े ही होते हैं।
फजीहता : क्या बुरा जमाना है कि औरतें भी ऐसा काम करने लगीं !
मनवा : जी हां किबला !
औरत : तुमने मुझे यह नोट नही दिया तो यह भी कह दो कि मैं तुम्हारी जोरू भी नही हूं।
[फजी]हता : हैं ! यह क्या कहा ? जोरू! अरे तौबा, तौबा ! यह बिचारी

तो बिल्कुल बदहवास हो रही है ! गरीब दुखियारी, आफत की मारी या जनाब बावरी ! यह कौन है ? कोई लावारिस बेचारी ?

औरत : तो क्या तुम मेरे मियां नही ?

फजीहता : शायद तुम अपना खाविन्द भूल गई हो ! बेशक एक शक्ल के दो आदमी होने से आदमी धोखा खा जाता है !

औरत : नही जमादार साहब, यह झूठा है। मैं इसी की जोरू हूं।

फजीहता : अच्छा माई, तुझे अपने मुंह पर अख्तियार है जो चाहे सो कह लेकिन मैं तो तुम को अपनी बहन समझता हूं। क्यों मनवा ?

मनवा : जी, किबला ! और मैं इनको अपनी मां समझता हूं।

औरत : हत्तेरा सत्यानास हो जाय ! मैं तुझ को पीटूं, तेरा हलवा खाऊं ! मुआ, जन्मजला, नसीबों-पीटा, तेरा खोज खोऊं !

फजीहता : अरे, अरे जमादार साहब, यह बेचारी तो बिल्कुल पागल हो गई !

जमादार : अच्छा सआदत खां, इसकी मुश्कें बांध लो वरना यह किसी को जरूर काट खायेगी।

औरत : जमादार साहब, मुझे क्यों बांधते हो ? मैं कुछ दिवानी नहीं हूं। मुझे तो इस बेईमान की बेईमानी पर गुस्सा आता है और यही जी चाहता है कि इस खबीस की बोटियां चबा जाऊं ! (फजीहता को काटने दौड़ती है)

मनवा : खा गई, खा गई ! खा गई !

फजीहता : देखिए, देखिए हुजूर, मैं न कहता था कि यह काट खायेगी !

औरत : अरे मूए, तू क्या अनजान बना है ! अपनी खाला को इतनी जल्दी भूल गया ! मुंडो-काटा, दुनिया भर का उठाईगीरा ! तुझे गोर (कब्र) में गाड़ूं ! इलाही ! इसे तो कफ़न भी नसीब न हो !

जमादार : चुप रह ! अब के बोली तो मजा पायेगी। तेरे पागलपन के हम गवाह हैं। हमारे सामने ही तू काटने को तैयार हुई !

फजीहता : जमादार साहब, इस बेचारी का पागलपन का दौरा बढ़ गया

है। अब इसको सीधे ही पागलखाने ले जाइए।

जमादार : सआदत खां, ले जाओ और इसे पागलखाने पहुंचा दो।

औरत : मुझे पागल कहने वाले को मलियामेट करूं, उसको पीटूं, कच्चा चबा जाऊं। उसको क़ब्र में गाड़ूं। खुदा करे, तू मर जाय, उजड़ जाय! तेरा नाम-लेवा, पानी-देवा कोई न रहे!

[पुलिस औरत को पकड़ ले जाती है]

फजीहता : ले जाओ, ले जाओ—

क्या हाथ साफ है! कभी खाली गया न वार।
मैं अपनी आप करता हूं तारीफ़ बार-बार!
मैं आफत का परकाला हूं, सो हिकमत-फितरत वाला हूं।
रगड़े-झगड़े की हंडिया में हल्दी मिर्च-मसाला हूं।
किस्मत का मारा-पीटा हूं मैं, फिर भी शेख फजीहता हूं।
लुच्चे, शोहदे, गुण्डे, बदमाशों का दादा हूं। मैं आफत का···
तुम मुझ को सांप समझो, भूतों का बाप समझो!
दुनिया का पाप समझो, मैं आफत का परकाला हूं···

[दोनों जाते हैं]

[पटाक्षेप]

आठवाँ दृश्य

[स्थान : सवलत का मकान]

सवलत : (स्वगत) हरेक इन्सान किस्मत की कैद में है और मेरी किस्मत एक दसीयतनामे की कैद में है। अफसोस ! मेरी गरीब तकदीर ! तुझे हर्फों की काली जजीर पहनाई गई ! फिर जजीर पर स्याह लफ्जों की मुहर लगाई गई ! इस पर लिफाफे के कैदखाने में डाला गया और कैदखाने के दरवाजे पर लाख का ताला है, और ताले की तिजोरी पहरेदार है। तिजोरी की हिफाजत का मेरा बाप जिम्मेदार है। किसी का पहुँच पाना दुश्वार है। अगर शैतान भी अपनी सारी चालाकी खर्च कर डाले तो भी तेरी रसाई दुश्वार है—

उम्मीद जिस से चूर हो वह बात चुनकर लायेगी।
दिल पीसने के वास्ते हुसना भी पत्थर लायेगी॥
हर लफ्ज होगा एक दाग अपने जिगर के वास्ते।
तैयार रह ऐ कान, तू ग़म की खबर के वास्ते॥

हुसना : क्यों आसमान रखता है ऐसा निखार चांद।
सदके इस एक चांद पे तेरे हजार चांद॥
दिलोजान, दीनो-ईमान खुशनुमा अंदाज के सदके।
इधर भी देख लो, मैं इस निगाहे-नाज के सदके॥

[हुसना का प्रवेश]

मवलत : कौन प्यारी हुसना !

हुसना : मेरे कैसर !

मवलत : अमृत लाई जहर हलाहल के वास्ते।
क्या यार मिल गया ग़मे-कातिल के वास्ते॥

हुसना : जन्नत थी इस तरफ को, जहन्नम था उस तरफ।
नेकी-बदी में जंग हुई दिल के वास्ते।
खूबी, अमानत, आबरू, हक़, फर्ज, एतबार
सब क़त्ल हो गए तेरे बिस्मिल के वास्ते।

मवलत : तो बेशक तू आबे-बका ले के आई
है मरहम मेरे जख्म का ले के आई।
मेरे दर्दे दिल की दवा ले के आई
सीयूं चाके-किस्मत वह दस्ता मुझे दे
फरिश्ते फरिश्ते ! नोश्ता[1] मुझे दे।

हुसना : चितवन ने जान छीनी, जुल्फों ने दिल संभाला।
थी अक्ल वह भी खो दी, पीकर वफ़ा का प्याला।
इस लूट से सिर्फ ईमान बच गया था।
तेरे खरीदने को ले वह भी बेच डाला।

[वसीयतनामा देती है]

मवलत : हां, यही है वह मंत्र, वह जादू, वह तिलिस्म, वह कैद जिसमें मेरी किस्मत बंद है। ऐ रंज ! अब दूर हो जा, जल जा। ग़म ! सुनता है ! उठ, और मेरे पहलू से निकल जा ! मैं गुस्से में हूं, ऐ निराशा, मेरे आगे से टल जा। संताप ! इन सारे खबीसों को निगल जा। हां, ऐश, खुशी, लुत्फ, सरूर आओ, मेरी तरफ आओ ! यह दिल खाली है, इसमें रहने के लिए आओ। हुर्रे हुर्रे, हिप-हिप हुर्रे !

1. तहरीर, दस्तावेज (वसीयतनामा)

हुसना : सवलत !

सवलत : *दौलत, ऐश, खुशी, फतह ! हुर्रे हुर्रे ! दारा को दरबानी दूंगा,* सिकंदर को खानसामानी दूंगा, कारूं गुहाफिज़े-खजाना होगा, जमशेद के हाथ में शराबखाना दूंगा। शेक्सपियर अपने नाटकों में मेरी तारीफ लिखेगा, फिरदौसी अपने शाहनामा के बाद अब मेरा ऐशनामा रचेगा, हुर्रे हुर्रे—

क्या कमाल है क़ारूं का खजाना मेरे आगे।
फैलायेगा अब हाथ जमाना मेरे आगे॥
रिज़वां को भी सर होगा झुकाना मेरे आगे।
इक खेल है जन्नत को बनाना मेरे आगे॥
फूले नज़र आयेंगे चमन लाल-ओ-गुहर[1] के।
देखूंगा जिधर फूल बरस जायेंगे ज़र के॥

हुसना : प्यारे सवलत !

ईमान है, एहसान है, नेकी है, खुदा है।
कागज़ पर फिदा हो गए इस तरह, यह क्या है !
शादी में कहीं ग़म के न पहलू निकल आयें।
इतना न हंसो जान ! कि आंसू निकल आयें।

सवलत : *सेहरा खुशी का बांधा किस्मत ने मेरे सिर पर।*
अब भी अगर यह रोये, लानत है चश्मे-तर पर।
दुनिया की इशरतों[2] से गहरी सदा बनेगी।
अब मैं बन्ना बनूंगा, दौलत बनी बनेगी॥

हुसना : यह मेरा हक है, वह कभी नहीं बन सकती। मेरे यूसुफ सानी (द्वितीय)! हुसना से वायदा और दौलत पर मेहरबानी !

सवलत : तो यह हाथ तेरे साथ भी मेहरबानी करने को तैयार है।

हुसना : *मगर मुहब्बत की मोहताज हुसना खुद इस हाथ की हकदार है।*

सवलत : तू इस हाथ को लेकर क्या करेगी ?

1. मोती 2. खुशियो

हुसना : इसकी गुलामी, मुहब्बत और इज्जत करूंगी। जब मेरी सेवा से खुश होगा तो इससे तेरा दिल तलब करूंगी।

सवलत : तो क्या तू मेरी बीवी बनने की आरज़ू रखती है ?

हुसना : सिर्फ मैं तो आपकी लौंडी बनना चाहती हूं।

सवलत : हुसना, लौंडी बनना इज्जत की तबाही है।

हुसना : मगर मुहब्बत की गुलामी दुनियावी बादशाही है।

सवलत : हुसना, सुन ! ग़ौर से सुन—

परी हो, मुश्तरी हो, नाज़नीं हो, महजबीं हो तुम।
जहान् में हुस्न की ज़ीनत हो जिससे, वह हसीं हो तुम॥
मगर यह दिल किसी लैला पै मजनू हो नहीं सकता।
तुम्हें मैं प्यार की नज़रों से देखू, हो नहीं सकता॥

हुसना : ओ खुदा ! ओ खुदा ! इन्सान इतना खुदग़र्ज़ है ! सवलत ! बेदर्द सवलत ! क्या यही मेरी हमदर्दी का ऐवज़ है :—

यह तो वह सीना है जो सिद्क[1] ओ-सफ़ा[2] का घर है।
यह तो वह काबा है जो पाक खुदा का घर है॥
कोई शीशा नहीं, पत्थर नहीं, तस्वीर नहीं।
दिल को मत तोड़ सितमगर, कि वफ़ा का घर है॥

सवलत : जब मेरे पास सोने और चांदी की ईंटें मौजूद हैं तो एक टूटे हुए मकान का बनाना क्या दुश्वार है—

मोती का साफ़ पानी, हीरों के साफ कंकर।
सोने की ज़र्द मिट्टी, लालों के लाल पत्थर॥
सब कुछ है, मांग, दूंगा, दिल का बना मकां तू।
काग़ज़ दिया है तूने, ले दौलते-जहां तू॥

हुसना : दौलत ! ओ बेमुरव्वत सवलत ! क्या तू मेरी वफ़ाओं को रुपये के ज़ोर से खरीदना चाहता है ? मुझे खुदग़र्ज़ बनाना चाहता है ?

सवलत : क्यों, क्या तू इन्सान नहीं ? क्या रुपये का नाम सुनकर मुझे

1 सच्चाई 2. पवित्रता

लालच नहीं आता ?

हुसना : लालच ! ओ खुदगर्ज ! इस वक्त तेरी समझ चूकती है। मुहब्बत दौलत की लालची नहीं बल्कि दौलत के नाम पर थूकती है।

सवलत : हुसना, तू बिल्कुल बेतमीज़ है। दौलत, प्यारी दौलत, खूबसूरत दौलत थूकने के लायक नहीं बल्कि चूमने के लायक चीज है—

खुशी, राहत, मजा, आराम, सब है इसके होने से।
यह वह नेमत है जिसकी मांग है यहां कोने-कोने से॥
मैं सच कहता हूं कि शैतान भी सिजदे में गिर पड़ता।
बनाते खाक के बदले अगर आदम को सोने से॥

हुसना : ख्वार दुनिया में हों, मगर उस जहां में बात रहे।
अपनी दौलत है वही, मर के भी जो साथ रहे॥
क़ब्र में सिर्फ कफ़न ओढ़ के सोना होगा।
न तो चांदी ही कहीं होगी, न सोना होगा॥

सवलत : अहमक !

इस बाग में वही गुले-जी-अख्तियार थे।
जिनके गले में लाल-ओ-जवाहर के हार थे॥
दारा-ओ-जम, सिकंदर-ओ-खाक़ान व कैक़बाद।
पागल न थे जो दौलत व जर पर निसार थे॥

हुसना : अगर दौलत ही को लाजवाल जानते थे तो बेशक वो दीवाने थे—

जम और दारा का माल सारा, ज़मीं पे या चर्ख पर, कहां है ?
भरे थे क़ारूं ने जो ख़ज़ाने, उठा के देख नजर अब कहां हैं ?
अंधेरी क़ब्रों में चुप पड़े हैं, चरागे-लाल-ओ-गुहर कहां हैं ?
वह रौब और शान कहां है, वह ज़र कहां है, वह घर कहां है ?
जो कल था दौलत से जगमगाता, वह आज काला पड़ा हुआ है।

वो क़ब्र में हैं और उनके घर पर फ़ना का ताला पड़ा हुआ है ॥

सवलत : बस, बस हुसना ! बस ! मैं दौलत के बिना तेरी खिदमत का एवज़ और कुछ नही दे सकता !

हुसना : मैं दौलत पर लानत भेजती हूं।

सवलत : मैं इस लानत पर नफ़रत करता हूं।

हुसना : मैं इस नफ़रत को नफ़रत से देखती हूं।

सवलत : हुसना, तू मुफ़लिस व फ़क़ीर है।

हुसना : मगर हुसना दिल और खसलत में तुझ से ज्यादा अमीर है।

सवलत : हुसना, सुन ! मैं अय्याश हूं, बदमाश हूं, बदकार हूं, तमाम दुनिया से हीन हूं मगर फिर भी मैं नवाबे-आज़म का बेटा हूं।

हुसना : इसलिए…?

सवलत : मैं इज्जत की बर्बादी नही कर सकता।

हुसना : यानी ?

सवलत : तू चोर है, और मैं चोर औरत से शादी नही कर सकता।

हुसना : मैं चोर, तुम साहूकार !

सवलत : क्या तुमने वसीयतनामा नही चुराया ?

हुसना : मगर मुझे चोरी करने के लिए किसने सुझाया ? एक फरिश्ते से किसने गुनाह कराया ? एक सीधी-सादी ईमानदार औरत को किसने बहकाया ? तूने ! ऐ दौलतमंद मुफ़लिस ! तूने ! जिस बदज़ाती से बढ़कर कोई बदज़ाती नही, जिस बेईमानी से बढ़कर कोई बेईमानी नही, जिस दग़ाबाज़ी से बढ़कर कोई दग़ाबाज़ी नही, वह किसने की ? तूने ! ओ नवाबे-आज़म के बेटे, तूने ! मैं मुहब्बत से सराबोर थी, मैं तुझ पर निसार थी, तेरी मर्ज़ी की ताबेदार थी, चोरी के लिए लाचार थी। ओ खूबसूरत सांपो ! तुम को कैसी ज़हरीली बातें याद होती हैं ! ओ खुदा ! ओ खुदा ! आज मुझे मालूम हो गया कि मर्दों के हाथ से बेचारी औरतें इसी तरह बर्बाद होती हैं, नामुराद रहती हैं, नाशाद रहती हैं—

दुआएं दी हैं मैंने जब कोई तूने जफ़ा की है।
खुदा ही दाद देगा बेवफ़ा, जैसी वफ़ा की है ॥

सवलत : वफ़ा कैसी ? कहां की वफ़ा ? वफ़ा महलों मे नही, किलों में नहीं, अमीरजादियों में नही, शहजादियों में नही, फिर तुझ में कहां से आई और तूने कहां से पाई ?

हुसना : तू वफ़ा को ग़लत जगह ढूढ रहा है। अमृत मुसीबतो में जाकर हाथ आता है। वफ़ादारी का चिराग अमीरों के महलो मे नही, ग़रीबों की झोंपड़ियो में जगमगाता है।

सवलत : खैर, मैं ही बेवफ़ा हूं, बावफ़ा है एक तू।
मैं ही दुनिया-भर का बद हूं, एक है बस नेक तू ॥
जैसी मुझमें है, किसी में ऐसी बदज़ाती नहीं।
छोड़ दे फिर, दूर हो, मर, किसलिए जाती नहीं ॥

हुसना : खैर जाती हूं मगर यह साथ ले जाती हूं।

[वसीयतनामा छीन लेती है]

सवलत : ओ दग़ा !

हुसना : बस दाग़ पाया, दाग दे जाती हूं।

सवलत : ला इधर काग़ज़ वगरना लूंगा ज़ुल्मो-जोर से।

हुसना : बस वहीं ठहरो, जहां आ जायेगा इक शोर से।

सवलत : हुसना प्यारी, हुसना !

हुसना : मैं प्यारी ! तेरी प्यारी !

सवलत : हां, मेरी प्यारी।

हुसना : कौन ?

सवलत : माहपारा !

हुसना : कौन ?

सवलत : दिलआरा !

हुसना : पर कौन ?

सवलत : अच्छी हुसना !

हुसना : अरे, पर कौन ?
सवलत : ऐसे वफादार से ऐसा सितम, फरेब !
हुसना : बेशक किया फरेब, मगर तुझ से कम फरेब।
सवलत : वह चाह, वह निबाह तेरे दिल से धुल गई।
हुसना : पहले थी ख्वाब में, मगर अब आंख खुल गई।

[हुसना चली जाती है]

सवलत : इन तेरी बेमेहरियों से हाय छाती छन गई !
बदबख्ती की तरह हुस्ना भी दुश्मन बन गई !
फ़जीहता : या इलाही खैर, क्यों उसकी तबियत फिर गई !
बंदापरवर, क्या हुआ क्योंकर तबियत फिर गई !
सवलत : हाय, फजीहता !
फजीहता : कैसा फजीहता, क्यों फ़जीहता, कहां फजीहता ?
सवलत : हाय फजीहता ! मैं मर गया !
फजीहता : (स्वगत) खुदा आपको जन्नत नसीब करे !
सवलत : अब क्या करें ?
फजीहता : (स्वगत) कफन खरीदें।
सवलत : कहां जाऊं ?
फजीहता : (स्वगत) क़ब्रिस्तान में।
सवलत : हाय, हम तो मर गए, मरदूद !
फजीहता : (स्वगत) वाह बेटा नमरूद ! खाकर मरूद मर गए मरदूद,
जिनकी फातेहा नदारद।
सवलत : अरे, यह क्या बुडबुड़ाता है ?
फजीहता : (स्वगत) नहीं, फातेहा पढ़ा जाता है।
सवलत : हाय, सबकी नजरों में अब मेरी इज्जत गिर गई !
फजीहता : (स्वगत) अब तुम्हारे इज्जत के घर में झाड़ू फिर गई।
सवलत : हाय, अब अपने ऐश-इशरत के दिन गये।
फजीहता : क्या सबब, हजूर ?

सवलत : किस्मत का पेच, तक़दीर का फतूर! फज़ीहता, हुसना आई थी और वह दस्तावेज़ साथ लाई थी मगर वापस ले गई!

फज़ीहता : ओह, वाकई हजूर, बहुत बुरा हुआ!

सवलत : मगर क्या तू कोई अपनी चालाकी दिखा सकता है?

फज़ीहता : हजूर, इसमें मेरी चालाकी तो बिलकुल लाचार है।

[जाता है]

सवलत : (स्वगत) सवलत! क्या किस्मत के जूए में तेरे लिए हार-ही हार है?

(अब्बासी आती है)

अब्बासी : खेल का कुछ कसूर नहीं, तुझे पांसा फेंकने का शऊर नहीं।

सवलत : तो क्या मेरी नादानी मुझ से मेरे दांव हराती है?

अब्बासी : बेवकूफ खिलाड़ी, क़िस्मत की बाज़ी तदबीर के मोहरों से जीती जाती है।

सवलत : मैं मुसीबतों से लाचार हूँ। अगर क़िस्मत के जीतने की तदबीर सिर्फ शैतान ही को मालूम है, तो मैं उसकी खुशामद करने के लिए हर तरह से तैयार हूं।

अब्बासी : शैतान कहता है, अपनी अक़्ल से काम लो।

सवलत : मेरी तमाम अक़्ल बांझ हो गई है, उससे कोई तदबीर पैदा नहीं होती।

अब्बासी : तो मेरी अक़्ल से काम लो! इन्सान अंधेरे में ठोकर नहीं खाता है, उसके चिराग में अगर तेल नहीं तो दूसरे से मांगकर अपना काम चलाता है।

सवलत : तू शमआ बनकर उजाला दे, मैं परवाना बनकर तेरी रोशनी में जलूंगा।

अब्बासी : यह दुनिया एक मैदाने-जंग है, जिसमें अक्ल तरक्की से लड़

रही है। एक आदमी की ग़र्ज़ दूसरे आदमी की ग़र्ज़ पर हमला कर रही है। हाथ-पांव मदद करते हैं। कमज़ोर मरते हैं और ज़बरदस्त मारते हैं। अगर दूरअंदेशी से अक्ल को सजाकर मैदान मे लाओगे तो तुम जरूर फतह पाओगे, वरना इस जिन्दगी की भयानक जंग मे एक बेजान लाश की तरह कुचल दिये जाओगे!

सबलत : तुम्हारे तमा! लफ़्ज़ दिल में दहशत पैदा करते हैं।

अब्बासी : इन्सान जब तक दहशत में नहीं पड़ता, उस वक़्त तक दिल के मक़सद का मोती हाथ नहीं आता। जब तक सांप को मारने के लिए आमादा नहीं होता, खजाना हाथ नहीं आता।

सबलत : तुम्हारा क्या मतलब है?

अब्बासी : आदमी का दूसरा नाम मतलब है। वह अपने लिबास के लिए रेशम के कीडों को पालता है, अपनी खुराक के लिए गरीब जानवरों को हलाल करता है। वह दुनिया की तमाम चीज़ों को अपना ख़िदमतगार ख्याल करता है।

सबलत : तो क्या उसे ऐसा न करना चाहिए?

अब्बासी : उसे ऐसा जरूर करना चाहिए। जो उड़ता नहीं, वह ऊपर नहीं जाता। जो मालिक बनने की कोशिश नहीं करता, वह गुलाम बनाया जाता है।

सबलत : ऐ मेरे दिमाग़ पर हुकूमत करने वाली, मैं अब क्या करूं? तक़दीर से किस तरह लड़ूं?

अब्बासी : तुम! तुम?

सबलत : हां, मैं।

अब्बासी : तुम्हें राहत और दौलत चाहिए?

सबलत : हां।

अब्बासी : तुम्हारे बाप को देने से इन्कार है?

सबलत : हां।

अब्बासी : तुम्हारा हाथ ज़ोरदार है?

: यानी?

अब्बासी : तुम्हारे पास खंजर आबदार है ?

सवलत : उफ़ !

अब्बासी : तुम्हारे खंजर में धार है ?

सवलत : तो ?

अब्बासी : थोड़ा जोश। एक वार और झगड़ा पार !

सवलत : क्या खून ?

अब्बासी : चुपचाप !

सवलत : बाप का ?

अब्बासी : रास्ते के सांप का।

सवलत : औरत ! औरत !

अब्बासी : गरीबी या दौलत ?

सवलत : मगर···मगर !

अब्बासी : सुनो, खंजर आबदार लो, मैं औरत हूं, मुझसे मर्दानापन उधार लो।

सवलत : मैं मर्द हूं।

अब्बासी : मैं खुश हूं। यह खंजर लो।

सवलत : (लेकर) बस !

अब्बासी : मरेगा ?

सवलत : मर चुका समझो !

[दोनों जाते हैं]

[पटाक्षेप]

नवां दृश्य

[स्थान—नदी के किनारे सवलत, अब्बासी और फ़ज़ीहता छुप कर आते हैं]

फ़ज़ीहता : रात स्याह !

अब्बासी : वक्त स्याह, वक्त स्याह !

फ़ज़ीहता : सह्न-ए-चमन पे कोयल मदहोश हो रही है।
बुलबुल चिराग़े-गुल को गुल करके सो रही है॥

अब्बासी : गहरी नींद में दरिया थम गया है।
बहता पानी उसका गोया जम गया है॥

सवलत : बज़्मे-जहां के मेहमान् आराम को सिधारे।
आसमानी-क़िले में जाके सब सो रहे सितारे॥

अब्बासी : दुनिया स्याह चादर ओढ़े हुए पड़ी है।
मर्दों के इम्तिहान की सवलत, यही घड़ी है॥
चलो, आज इस खंजर से दो काम करने हैं—
तुम्हारे बापके साथ हुसना का भी काम तमाम करना है।

[सामने से हुसना आती हुई दिखाई देती है]

सवलत : हां, वही आ रही है !

अब्बासी : सब छुप जाओ। मौत शिकार को धोखा देकर ला रही है !

[सब छुप जाते हैं]

हुसना : (आकर स्वगत) रात के अँधेरे ने तारों को दुनिया का गुनाह न देखने के लिए छुपा लिया है। यही वक्त है जब नापाक ख्याल दिल में उबलता है। यही वक़्त है जब जुर्म गुनहगार के सीने से बाहर निकलता है। यही वक़्त है जब शैतान की रूह जागती है। यही वक़्त है जब जालिम का खंजर मजलूम के गले पर चलता है और उसकी थरथराती हुई चीख खुदा की तरफ़ पनाह लेने के लिए भागती है। यही वक़्त था जब मुहब्बत ने ईमान को बहकाया और मैंने वसीयतनामा चुराया। चल हुसना, तेरा गुनाह सख्त है, मगर इस गुनाह से छुटकारा पाने का भी यही वक्त है।

[सवलत, सन्यासी सब बाहर निकल प्रकट होते हैं]

सवलत : छुटकारा नहीं, तेरी मौत का वक्त है।

हुसना : ओ खुदा !

सवलत : बस, ठहर जा।

हुसना : ओ एहसान-फरामोश !

सवलत : बस, खामोश !

[खंजर दिखाता है]

हुसना : ओ बेरहम, क्या यह खंजर मेरा खून पीने को तैयार है ?

सवलत : हाँ, खून, खून, तेरा खून लज्जतदार है।

हुसना : मैंने कौन-सा क़सूर किया है?

सवलत : तूने मेरी उम्मीदों को चूर किया है।

हुसना : सवलत, सवलत !

सवलत : वसीयत, वसीयत, बेवकूफ औरत ! वसीयत !

हुसना : नहीं, यह तू कभी न पायेगा। यह जहाँ से आया है, वहीं जायगा।

सवलत : नहीं ! कैसी नहीं ? सुन, तू तो मार(सर्प)आस्तीं निकली।
जबाँ ही काट डालूंगा अगर मुंह से 'नहीं' निकली॥
तेरे इन्कार के पंजे को यह लोहा मरोड़ेगा।
तुझे देना पड़ेगा, तुझसे खंजर लेके छोड़ेगा॥

[वसीयतनामा छीन लेता है]

हुसना : ओ ज़ालिम, मैंने हमेशा तेरे साथ मुहब्बत की।
सवलत : नहीं, तूने हमेशा मेरे साथ अदावत की।
हुसना : ओ पुरजफ़ा, मैं तेरी मिन्नत करती हूँ।
सवलत : ओ पुरदगा, मैं तुझ पर लानत भेजता हूँ।
हुसना : ज़ालिम, मैं तेरे क़दमों पर सर झुकाती हूँ।
सवलत : ओ नापाक, मैं तेरे सर को ठोकर मारता हूँ।
हुसना : ऐ अंधेरी रात, तुझसे बढ़के है यह दिल स्याह।
ऐ सितारो, इसकी बेरहमी पे रखना तुम निगाह॥
ऐ ज़मीं, बहता है तुझपे आज खूने-बेगुनाह।
ऐ फ़लक, तू देखता है, हश्र में रहना गवाह॥
नौजवां मरती हूँ मैं और बावफ़ा मरती हूँ मैं।
ओ खुदा, आदिल खुदा, सुन, बेख़ता मरती हूँ मैं॥

सवलत : सुन चुका। अब सर झुका और क़ब्र में बदज़ात जा!
हुसना : रहम, ज़ालिम रहम !
सवलत : हां, अब रहम और तू साथ जा।

[सवलत हुसना को खंजर से मारना चाहता है, तभी नवाबे-आज़म आकर रोकते हैं।]

नवाब : बस, ख़बरदार !

वासी : सवलत, क्या देखता है, मार !

[मच्वासी पीछे से नवाबे प्राजम को मार देती है। हुसना भागना चाहती है। फजीहता उसे नदी मे धकेल देता है]

[पटाक्षेप]

द्वितीय अंक

पहला दृश्य

[जंगल। सिपाही घेरा डाले बैठे हैं। अस्फंदयार का प्रवेश]

अस्फंदयार : (आते ही) होशियार हो जाओ, खुशी से सब फूल जाओ।

सरदार : इस कदर खुशी का इज़हार! क्या खबर लाये अस्फंदयार?

अस्फंदयार : बहादुर सरदार, जिस गरीब औरत को हमने पानी से निकाला, वह अब अच्छी तरह होश में आई है और उसकी बातों से मालूम हुआ कि हमारे स्वामी फीरोज नामदार की माँ-जायी है।

सरदार : क्या हमारे स्वामी की कोई बहन थी?

अस्फंदयार : जी जनाब! आज से बीस बरस पहले जब बड़े हुजूर यानी स्वामी नामदार के वालिद पर बगावत का इल्ज़ाम लगाया गया और उनके साथ उनके खैरख्वाहों को भी शहर-निकाला दिया गया, उस वक्त उनके दो बच्चे थे—एक दो बरस की बच्ची हुस्नअफ़रोज, और एक नौ बरस का लड़का फीरोज़। फीरोज़ होशियार था, इसलिए हुजूर उसे साथ लाये थे और हुसना को कमसिनी की वजह से अपने जानी दोस्त नवाबे-आज़म के पास परवरिश करने के लिए सौंप आए थे।

सरदार : क्या यह वही बच्ची है, जो पूरी जवान औरत बनकर दरिया मे बहती हुई मिल गई?

अस्फंदयार : जी हाँ, मेरे साहब!

सरदार : शुक्र है खुदा का जिसने मुद्दत के बिछड़े हुए दोनों भाई-बहन को मिलाया !

[सब खुशी से गाते हैं] :

परवरदिगार, कारसाज, कारोबार पर है अख्तियार।
खाकसार, ख्वारजार, हम हैं गुनहगार,
तेरे आगे सरको झुकायें।
दुख-सितम क़दम-क़दम था हमपे दम-बदम।
तेरे करम से टल गए तमाम रंज-ओ-ग़म॥
खुशी से आज सारे भर गए, मिट गए अलम।
तेरे आगे सरको झुकाए परवरदिगार कारसाज !

[गाने के बाद सब चले जाते हैं। फीरोज और हुसना आते हैं]

फीरोज : बस, बस !

हुसना : भाई फीरोज, यह तो खुदा की मर्जी थी।

फीरोज : तो बहन हुसना, वह इस तलवार से जरूर मारा जायगा। यह भी खुदा की मर्जी है। क्या मुझमें शरीफों का गुस्सा, जवानों का जनून नहीं है ? क्या मेरे पास तलवार नहीं है ? क्या मेरी तलवार का दुश्मन शिकार नहीं है ?

हुसना : भाई, बेशक तुम्हारी तलवार भी बिजली है मगर यह तो समझो कि अगर बुराई का बदला बुराई से दिया जाय तो फिर हममें और बुराई करने वाले में क्या फ़र्क है ?

फीरोज : हुसना, आग को आग ही से जलाना होगा। उसने तेरे हक में जुलम का बीज बोया था, तो अब उसे मेरे हाथ से तलवार का फल जरूर खाना पड़ेगा।

हुसना : नहीं भाई !

फीरोज : बस चुप रह ! आह, जिस दिन जालिम ने तुझको बहते

दरिया की पुरशोर लहरों के दामन का कफन देकर भंवर के ताबूत के हवाले किया होगा, उस दिन वह समझता होगा कि मेरे घर मे ईद है। लेकिन आज मैं अपने घरमे बक्रईद पाता हूँ और इस बक्रईद की खुशी में सवलत की कुर्बानी अपने हाथ से करना चाहता हूँ।

हुसना : रहम, रहम, मेरे दिलेर भाई ! मेरे शेर भाई, रहम !

फ़ीरोज : हुसना, मेरी अदावत मोजजन (उद्वेलित) है।

हुसना : मगर मुहब्बत ज्यादा जोशजन है।

फ़ीरोज : अदावत (दुश्मनी) का चश्मा जब उबलता है तो फिर दुश्मनों को बहा ले जाता है।

हुसना : और मुहब्बत का दरिया जब जोश में आता है तो दोस्तों को खौफ़ की मंझधार से निकालकर, अमन-ओ-अमान के किनारे पर जा पहुँचाता है।

फ़ीरोज : मेरे दरियाए-अदावत की मौज (लहर) उस संगदिल से जरूर टकरायेगी और उसके टुकड़े-टुकड़े उड़ायेगी, उसकी नापाक हस्ती को जरूर मिटायेगी।

हुसना : मगर मेरी मुहब्बत की चट्टान ढाल बन जायेगी और उसे अपनी आड़ में जरूर छिपायेगी।

फ़ीरोज : हुसना, मुझे इन्तिकाम लेने दे। वह तेरा सताने वाला है। उसका दिल मौत की तरह बेरहम और क़ब्र की तरह काला है।

हुसना : यह सच है, मगर प्यारे भाई, यह तो ख्याल करो कि उसके बाप नवाबे-आजम ने मुझे अठारह बरस तक अपने बच्चों की तरह पाला-पोसा है।

फ़ीरोज : आह ! नवाबे-आजम कैसा शरीफ, नेक, उदार, वालिद मरहूम का अकेला और सच्चा दोस्त था, हमारा रोआं-रोआं उसके एहसानों का कर्जदार है। अफ़सोस ! बाप जितना ही नेक-ख़सलत था, बेटा, उतना ही बदकार है, जहन्नुम का सजावार है।

हुसना : भाई, बाप की शराफत का ख्याल करके बेटे की नालायक हरकतों को जरूर नजरअंदाज करो।

फीरोज : नजरअंदाज करूँ और उसे बख्श दूं ? नहीं, नहीं, मैं उससे जरूर बदला लूंगा और उसकी बदकारी की सजा जरूर दूंगा।

हुसना : क्या बदला तलवार से लिया जायगा ?

फीरोज : आह ! तलवार को तो उसके बाप के एहसानों ने तोड़ दिया, अब सजा दूंगा लानत की बौछारों से, मलामत और फटकारों से। मैं उसके पास जाऊँगा, उसके सब जुल्म उसके आगे दोहराऊंगा और उसे इस कदर जलील करके आऊंगा कि जब तक इस दुनिया में जिन्दा रहेगा, अपनी पाजियाना हरकत से शर्मिन्दा रहेगा; मुसीबत, जिल्लत और दुख पाने के लिए जिन्दा रहेगा।

[चला जाता है]

हुसना : बावफ़ाओं पर जो इस तरह जफ़ा करते हैं,
सख्त बेदर्द हैं, जालिम हैं, बुरा करते हैं।
तू सलामत रहे, आबाद रहे, शाद रहे।
हम तो जिन्दा हैं जब तक, यह दुआ करते हैं।

[गाती है]

मंझधार में नैया मोरी ! पार लगाओ,
डूबती दुखिया को बचाओ।
मौज उठे भारी-भारी,
छाई गम की अंधियारी,
निराशा को आशा बंधाओ।
रे जानां सितम का फल,

किया है पारा-पारा आरजू का दिल।
लुटा घर, दर, जर, छूटा दिलबर,
दिलआरा, रहा न अब कोई सहारा।
हाय मंझधार में नैया मोरी !…

[जाती है]

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[स्थान—मब्बासी का मकान। मब्बासी और सवलत सो रहे हैं। फज़ीहता आता है]

फज़ीहता : (स्वगत) गरज़ी यार किसके ? मतलब निकला और यार खिसके ! दुनिया में सगे बाप और भाई पर भी भरोसा न करना चाहिए। सयाना वह है जो हर वक्त कील-काटे से तैयार रहे। मौका आ पड़े तो सबसे पहले वार करने को तैयार रहे। अगर सवलत आज मेरा दम भर रहा है—जो कहता हूं, वह कर रहा है—मगर कल ही बदल जाय तो क्या देर लगती है ? उसको हमेशा के लिए काबू में रखना चाहिए। और काबू में रखने की यह तदबीर है, कि आज वसीयतनामा मैं चुरा ले जाऊं। अपने हिस्से में से चौथाई मुझे बाट दे तो हवाले करूं वरना धता बताऊं। अच्छा अब काम शुरू करना चाहिए। (वसीयतनामा चुराने के लिए दबे पांव आगे बढता है और चुरा लेता है) बस अब इस कागज़ के ज़रिए जो नाच मैं उसे नचाऊंगा, वही नाचेगा। (जाता है मगर तभी फीरोज आता है) !

फीरोज़ : मैं नाच-नचाने से पहले, इस लोहे के जूते से तेरी खोपड़ी सहलाऊगा। (फीरोज उसके पीछे-पीछे जाता है)

[मब्बासी ख्वाब में बड़बड़ाती है। सवलत उसकी आवाज़ सुनकर जाग जाता है और उसकी बातें सुनता है।]

सवलत : जहन्नम क्या है ?···आग का घर···

अब्बासी : आग क्या करती है ?···इन्सान को जलाती है···।

सवलत : जलने से क्या होता है ?···रूह तकलीफ़ पाती है।···जिस रोज़ से मैंने गुनाह किया है, उसी रोज़ से मैं जहन्नम मे गिरफ्तार हूं। दिमाग़ में कोई डंक मारता है। सोता हूं तो खबीस डरावनी शक्लें ख्वाब में आकर सताती हैं। जागता हूं तो 'खूनी, दगाबाज, खुदगर्ज,' अजीब-अजीब किस्म की आवाजें कान में आती हैं···।

अब्बासी : (चौंक कर) ले लो मेरा सब-कुछ ले लो, मगर मुझे अंधेरे ग़ार में, खुदा के लिए, न धकेलो···

सवलत : देख सवलत, देख, इसे भी तेरी तरह गुनाह सता रहा है ! नहीं, नहीं, नापाक ख्याल दिमाग के जहन्नम में सजा देने के लिए बुला रहा है।

अब्बासी : (ख्वाब में) नहीं, नहीं, मुझे सांपों के ग़ार में न उतारो। मुझे आग के कोड़े न मारो, मेरे पास वसीयतनामा नहीं है।

सवलत : क्या ? वसीयतनामा नही है ?

अब्बासी : (ख्वाब में) हां, मेरे पास नही है।

सवलत : फिर नहीं ? वसीयतनामा तू हमेशा अपने सरहाने रखकर सोती थी। (उसके सरहाने देखता है) गजब ! यहां तो सचमुच नही है ! क्या बर्बादी-तबाही ! कहीं अलमारी मे तो नही रख आई ?···ओ खुदा, मैं मर गया, सवलत, तेरी उम्मीदों पर पानी फिर गया···!

[अब्बासी घबराकर उठती है]

अब्बासी : खून, खून ! छोड़ो, मुझे छोड़ो ! मैं आग और अंधेरे में नही जाना चाहती···

सवलत : अब्बासी, वसीयत···?

अब्बासी : चले जाओ, दूर हो जाओ, मुझे न छेड़ो···।

सवलत : वसीयतनामा···अब्बासी, वसीयतनामा ?···
अब्बासी : यह कौन ?···क्या ख्वाब या सवलत !···

(बेहोश होकर गिरती है)

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[स्थान : फजीहता का मकान]

फजीहता : (अन्दर से गाता हुआ आता है)

ऐ वाह फजीहता तेरी तकदीर की खूबी !
दिल लाया उड़ा, यह तेरी तदबीर की खूबी !
बड़ा हूं दाना, बड़ा हूं सयाना, बड़ा दंगी जंगी फरजाना।
चलता हूं पुर्जा, सबसे सयाना, मैं आफत का फितना।
फजीहता हूं, पलीता हूं ! आहा हा हा हा !
हमदम बनकर घरगालूं करूं, वल्लाह !
घर-दर सब चट कर डालूं, जो हाथ आया सो बिस्मअल्ला !
बड़ा हूं दाना···

जब मुझे अचानक इस तमस्सुक (दस्तावेज) पर कब्जा पाने का ख्याल आता है तो बेअख्तियार पुकार उठता हूं कि इलाही···

आज किस्मत ने दिया क्या डाल मेरी जेब में।
आ पड़ा जो बैंक ऑफ बंगाल मेरी जेब में।
कल तो कौड़ी-कौड़ी का था काल मेरी जेब में।
आज लाखों का पड़ा है माल मेरी जेब में।
कल न था एक सूत का रूमाल मेरी जेब में।
आज सोने के पड़े हैं थाल मेरी जेब में।
कल न मिलता था मुझे फूटा दीया।

और आज है आफताबे-इज्जत व इकबाल मेरी जेब में।
मैं हैरान हूं कि यह बूढ़ा खूसट, यह कारूं का खजाना लाया तो कहां से लाया ?... शायद घुड़दौड़ में आता होगा ! मगर नहीं। घुड़दौड़ में जाने वाले तो खाने-कमाने के बदले मुंह की खाते हैं। जाते वक्त तो नेपाली घोड़े की तरह उछलते-कूदते जाते हैं मगर आते वक्त मरियल गधे की तरह ढींचू-ढींचू करते आते हैं। खैर जी, चाहे कमबख्त जहन्नम से लाया, मगर आखिरकार काम तो यारों के आया ! अब कोई रोये या सर पीटे, तुम चैन उड़ाओ मियां फजीहते !

[फीरोज आता है]

फीरोज : आहा ! कमबख्त भाग गया !

फजीहता : (स्वगत) हैं ! यह बला कहां से आ टपकी ! अजी हजरत !

फीरोज : हां, यह शेर था, बड़ा जबर्दस्त खूरेज ! बारह हाथ का लम्बा ! मगर कर गया गुरेज !

फजीहता : लो एक और अंधेर ! कमबख्त, क्या ख्वाब में देख रहा है—बारह हाथ का शेर ? अजी मियां दलेर !

फीरोज : क्यों ?

फजीहता : यह बताओ, यहां काहे को आये ?

फीरोज : हमारी खुशी ! दिल ने चाहा तो आये !

फजीहता : अरे, वाह रे, तुम्हारी खुशी ! तुम्हारा दिल चाहेगा तो किसी का गला भी काट लोगे ?

फीरोज : बेशक ! हमारी खुशी !

फजीहता : अरे वाह ! अच्छी तुम्हारी खुशी !

फीरोज : अच्छा, अच्छा, न घबराओ, जरा इधर आओ, एक कुर्सी उठा लाओ।

[फजीहता कुर्सी लाने जाता है]

फजीहता : (स्वगत) अब क्या करूं ? यह कमबख्त तो गले पड़ गया ! ट्राम के घोड़े की तरह यहीं अड़ गया ! अब यहां नरमी से तो काम न चलेगा, जरा सख्ती से पेश आऊं तो यह यहां से टलेगा ! (प्रकट) सुनो जी, मैं कहता हूं···।

फीरोज : हां कहो, मैं सब सुनता हूं !

फजीहता : बस मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि फौरन से पेशतर और पेशतर से भी पहले मेरे घर से निकल जाओ वरना मैं पुलिस को बुलाता हूं।

फीरोज : (तमंचा दिखाकर) खबरदार ! ओ बदकार ! वरना अभी यह गोली होगी सीने से तेरे पार !

फजीहता : हाय हाय ! यह क्या ? डाकाजनी का हथियार !

फीरोज : हां, यमराज का मददगार !

फजीहता : तो क्या यह सचमुच का तमंचा है ?

फीरोज : जी हां, यह जान निकालने का शिकंजा है !

फजीहता : अरे, चूल्हे में जाय तेरा तमंचा-शिकंजा ! (स्वगत)
लेना न देना मुफ्त का यह दर्द सर कैसा लिया।
धमकी जिसे देता था मैं उसने मुझे धमका दिया !

फीरोज : क्यों, क्या सोच रहा है !

फजीहता : मैं यह सोच रहा हूं कि आप यहां क्यों पधारे ?

फीरोज : शिकार को !

फजीहता : अगर आपको शिकार का शौक है तो फिर शिकारगाह की तरफ आप तशरीफ ले जाइए।

फीरोज : नहीं।

फजीहता : नहीं तो किसी जंगल की तरफ जाओ।

फीरोज : नहीं।

फजीहता : नहीं तो जहन्नम को जाओ।

फीरोज : नहीं, मेरा दिल तो तुम्हारे शिकार को चाहता है।

फजीहता : हाय, हाय, मेरा शिकार !

फीरोज : यह देखो, मेरे हाथ में क्या है बबाल !

फज़ीहता : आ गया बैताल, आदमी के जी का काल !

फीरोज़ : हां, इस पर नज़र रखिए !

फज़ीहता : मगर साहब, ज़रा मेहरबानी फरमाकर इसको उधर ही रखिए। मगर यह भरी है या खाली ?

फीरोज़ : देखो, यह पिस्तौल दोनाली ! मगर एक में चार गोलियां हैं और एक खाली। लेकिन तुम न घबराओ। यह मेरे हुक्म के बगैर कुछ न करेगी ! जब तक मैं एक, दो, तीन न कहूंगा, तब तक एक गोली भी न चलेगी।

फज़ीहता : गोली चले या न चले, मगर मेरा तो दम तुम्हारी बातों से ही निकला चला।

फीरोज़ : अजी डरो नहीं, मैं तो तुम्हें क़त्ल करके चला जाऊंगा।

फज़ीहता : वाह, यह तो क़त्ल करना ज़रा-सी बात बताता है ! क्या आप मुझे कुत्ता-बिल्ली समझते हैं ?

फीरोज़ : देखो, मैं एक, दो, तीन करके पिस्तौल चलाऊंगा और तुम्हारे सर का निशाना बनाऊंगा।

फज़ीहता : हैं, हैं! यह आप क्या करते हो ?

फीरोज़ : कुछ नहीं, केवल तुम्हारा खून !

फज़ीहता : यह लो, केवल खून !

फीरोज़ : हां, बस यही मजमून !

फज़ीहता : मगर बेखता मारने से तुम्हें क्या हासिल ?

फीरोज़ : मेरी मर्जी और शौके-दिल।

फज़ीहता : मगर साहब, यह शौक बहुत बुरा है।

फीरोज़ : बुरा हो या भला, जब तुमको शौक हुआ तो तुमने खून बहाया, और अब हमारे शौक के पूरा करने का वक्त आया। चलो, अब सीधे खड़े हो जाओ। एक···दो···

फज़ीहता : ओ बाप रे ! लेना एक न देना दो ! अजी ठहरिए जनाब !

फीरोज़ : अरे चुप, अपने गुनाह से तौबा कर ले !

फज़ीहता : मगर मैंने गुनाह ही कौन-सा किया है, जो मार-मार कर तौबा कराता है ?

फीरोज : तूने गुनाह नहीं किया तो फिर मरने से क्यों जी चुराता है? अरे, मरने वाला तो सीधा जन्नत को जाता है।

फजीहता : जब मौत आयेगी तो मैं मर जाऊंगा, मौत से पहले कैसे मर जाऊं?

फीरोज : फर्ज करो, मैं ही तुम्हारा काल हो जाऊं! एक…दो…

फजीहता : या अल्लाह! बचाइयो! अरे खुदा के बंदे! कुछ तो खौफ़े-खुदा कर!

फीरोज : चुप, चुप! जब तूने क़त्ल का मौका पाया था, उस वक्त तेरे दिल में भी कुछ खुदा का खौफ आया था?

फजीहता : साहब, मैंने किसको क़त्ल किया है? मैंने तो अपने हाथ से एक चींटी को भी नहीं मारा!

फीरोज : चींटी को तो नहीं मारा है, मगर एक इन्सान को तो मौत के घाट उतारा है! चलो, अब अपनी जिन्दगी के जहाज का लंगर उठाओ।

फजीहता : अरे! पर कौन-सी बन्दरगाह को?

फीरोज : चलो, अब अदमआबाद (मृत्युलोक)! एक…दो…तीन (पिस्तौल चलाता है)।

फजीहता : अरे, हाय, हाय रे, मैं मर गया! अरे दो नाली बंदूक मार दी और गोली मेरे पेट में उतार दी! हाय, मेरी जान गई! अरे, मैं मर जाऊं, एक…दो…तीन। (मुर्दा बनकर लेट जाता है)।

फीरोज : (स्वगत) कमबख्त कैसा मक्कार है! मैंने खाली फायर किया और इसने सचमुच ही अपना हाल बेहाल किया! अबे उठ! एक ही गोली में मर गया! अभी तो तीन गोलियां और चलाऊंगा। (स्वगत) जरा इसको बनाता हूं। (प्रकट) अब मेरा काम पूरा हुआ। अब जल्दी यहां से फरार हो जाऊं (चला जाता है)।

फजीहता : (उठकर) एक…दो…तीन! हुसेरा बाप मरे! कमबख्त ने एक…दो…तीन करके मेरी जान आधी कर दी! अब

मेरे दिल को क़रार हुआ। अब मुझे कोई नहीं मार सकता!

[फीरोज दोबारा आता है]

फीरोज़ : मार सकता है।

फज़ीहता : बाप रे! फिर आया!

फीरोज़ : अरे वाह! यह तो तू अच्छा स्वांग लाया! एक···दो···

फज़ीहता : अरे साहब, इसे रहने दो!

फीरोज़ : क्यों ओ मरदूद! तू तो मर गया था!

फज़ीहता : हां, मर तो गया था, मगर दम लेने को फिर जिन्दा हो गया हूं।

फीरोज़ : खैर, अब मैं तुम्हारा पूरा बन्दोबस्त करूंगा। तेरा गला काट के अब कब्र में दफन करूंगा।

फज़ीहता : देखिए साहब, अब तो आपका शौक पूरा हो गया। अब तो मेरी जान पर सितम न तोड़ो, खुदा के वास्ते, अब मेरा पीछा छोड़ो!

फीरोज़ : खैर, मुझे तेरी मिन्नतदराजी पर रहम आता है मगर एक शर्त से तेरी जान बख्शी का वायदा किया जाता है।

फज़ीहता : फरमाइए, फरमाइए! जल्द फरमाइए! मैं आपकी शर्त हर तरह से मानने को तैयार हूं।

फीरोज़ : मगर खबरदार! देखना, मुझे धोखा दिया तो फिर एक··· दो···

फज़ीहता : बार-बार एक···दो···अजी बस, इसको फेंक दो!

फीरोज़ : नहीं, नहीं! मैं तो तुझे यूं ही खबरदार करता हूं।

फज़ीहता : अजी, मैं तो बिल्कुल खबरदार हूं। मगर इस बेताल से जरा डरता हूं।

फीरोज़ : मैं तो यूं ही दिल्लगी करता हूं।

फज़ीहता : मैं तो बेमौत मरा जाता हूं।

फीरोज़ : अच्छा तो अब इधर आओ, मुझ से न डरो।

फजीहता : पहले मेहरबानी करके इस अपने एक···दो को गिलाफ दो।

फीरोज : अच्छा, यह लो! (तमंचा छिपा लेता है) अब चलो, तुम्हारे पास जो वसीयतनामा है, वह तुम मुझे दे दो।

फजीहता : हैं! आपने क्या फरमाया?

फीरोज : जो वसीयतनामा तू चुराकर लाया···

फजीहता : मेरी समझ में न आया!

फीरोज : तो फिर मैं समझाऊं?

फजीहता : यह समझाना कैसा?

फीरोज : फिर यह कुत्ता-बाला कैसा?

फजीहता : जनाब, मेरे पास वसीयतनामा कहां से आया? आपने यह क्या सुनाया?

फीरोज : जहा से तू चुराकर लाया।

फजीहता : हाय! यह सब मैं नही जानता।

फीरोज : यह मैं नही मानता।

फजीहता : अच्छा, जरा मैं सोच लू। (दर्शकों से सम्बोधन) भाई, सच कहना, मैंने क्या किसी का वसीयतनामा चुराया था? या कोई कागज मेरे हाथ आया था? नही, भला मैं और चोरी करूं! तौबा, तौबा! (स्वगत) मगर इस बात से मेरा फरेब नही चलेगा। बेहतर है कि मैं यहां से रफूचक्कर हो जाऊं। किसी तरह से एक···दो···तीन से अपनी जान बचाऊं! (फिर दर्शकों से) हां हा, क्या आपने मुझे बुलाया! आया, आया···(जाना चाहता है)।

फीरोज : खबरदार! (फिर पिस्तौल निकालता है)।

फजीहता : खुदा जाने, इस जानलेवा चीज का बनाने वाला कौन मरदूद होगा! वह न पिस्तौल बनाता, और न यह एक···दो···तीन करके डराता!

फीरोज : अरे, अब यह कोसना-कासना रहने दे। जल्दी कर। नही तो देख—एक···दो···।

फजीहता : क्यों साहब, घड़ी-घड़ी एक···दो···तीन करके मुझे आप

क्यों डराते हो ! मारना है तो फिर एक दफ़ा मार दो।

फीरोज : जब तू खुशी से मरने के लिए तैयार है तो मुझे कब इन्कार है। चलो, एक··· दो···।

फज़ीहता : (दर्शकों से) अरे, बोलो, यारो, यहां कोई आठ थाने का वकील या बैरस्टर है जो तदबीर बताये, मैं उसी पर अमल करूं और मुझे इस मूज़ी के पंजे से छुड़ाये !

फीरोज : अरे क्यों, निकाला ?

फज़ीहता : अरे, निकालता हूं, बाबा, निकालता हूं। (कागज ढूंढ़ने का नाटक करता है और दुख से सिर पीटता है)।

फीरोज : अरे क्यों, बदहवास हो गया ?

फज़ीहता : हाय, हाय, मेरा तो सत्यानास हो गया ! वो कागज तो कहीं खो गया !

फीरोज : कहां खो गया ?

फज़ीहता : अजी साहब, मैं बाज़ार में रोटी खाने गया था तो वहां किसी ने मेरी जेब से निकाल लिया !

फीरोज : क्यों, फिर वही चाल चलता है ? देखूं तो तेरी मुट्ठी में क्या है ?

फज़ीहता : जी, कुछ नहीं। क्या है ? (कागज मुंह में छिपाकर मुट्ठी खोल देता है)।

फीरोज : ओ दगाबाज ! खबरदार ! मुंह खोल, नहीं तो छोड़ता हूं पिस्तौल ! (मुंह में से वसीयतनामा निकाल लेता है) अच्छा जा, मैंने तुझे छोड़ दिया।

फज़ीहता : जी निकाल लिया और मुर्दा छोड़ दिया ! अच्छा, इतना तो बता दो कि आप कौन साहब हैं और यह वसीयतनामा आपके किस काम आयेगा ?

फीरोज : यह मेरे किसी काम नहीं आयेगा। जिस तरह एक से दूसरे के पास आया है, उसी तरह दूसरे से तीसरे के पास जायेगा।

फज़ीहता : यानी ?

फीरोज : यानी रज़िया के पास।

फजीहता : हैं !

फीरोज : क्यों, हुआ बदहवास !

फजीहता : मेरा तो हो गया सत्यानास !

फीरोज : अभी कहां ? सुन—

कुछ देर नहीं, अंधेर नहीं, इन्साफ और अदलपरस्ती है।
इस हाथ करो, उस हाथ मिले, यह सौदा दस्तबदस्ती है ॥

फजीहता : अजी साहब, यह ख्वामखाह की जबरदस्ती है।

फीरोज : खबरदार ! होशियार रहना ! एक···दो···तीन (हवाई फायर करके चला जाता है)।

फजीहता : अफसोस गिनते रह गए हम एक, दो, तीन।
वह दे के उड़ गया हमें दम, एक, दो, तीन ॥
शाही खजाना हाथ से आकर निकल गया।
पल्ले रहे न दाम-ो-दरम, एक, दो, तीन ॥
मैं तो न छोड़ता उसे, पर हाय, क्या करूं।
देते थे मुझको रंज-ओ-अलम, एक, दो, तीन ॥
एक यह तो दूसरा उसका तमंचा शरारती।
और तीसरी आवाजे-सितम, एक, दो, तीन ॥
खुदाबंद, मेरी खुशी क्या नीलाम की बोली थी जो पूरे एक, दो, तीन पर खत्म हो गई !
सुबह सुबह मुर्ग-सहर[1] बोल उठा कुकड़ूं कूं।
दिल गया, माल गया, रह गए हम टुटरूं टूं ॥

[पटाक्षेप]

1. सुबह

चौथा दृश्य

[स्थान—रज़िया का महल। रज़िया सहेलियों के साथ गाती है]

नाहीं मानूं री सखी, क्यों समझावे,
काहे राड मचावे, तोहे लाज न आवे।
तेरे क़ुर्बान, बिनती मान! मतवारी, सुन प्यारी!
बलिहारी, हम यारी नाज-ओ-अदा की हैं,
जब फौज साथ तो फिर खौफ खाने की है कौन बात।
थर-थर से थर-थर जियरा कंपावे।
मैं न मानूं री······

डाली : ऐ हुजूर, आपकी हठ भी दुनिया से निराली है! किसी से दो-तीन बातें कर लेना कोई गाली है?

रज़िया : मगर तू जानती है कि मुझे तो मर्दों से सख्त नफ़रत है।

बहार : यह तो सच है, लेकिन एक शरीफ आदमी को दरवाजे से टाल देना, यह भी मुरव्वत के खिलाफ है।

रज़िया : मगर तूने यह कैसे जाना कि वह शरीफ है?

डाली : रंग से, ढंग से, ढाल से, आन से, बान से, चेहरे की शान से, तरजे-ज़बान से, शरीफों में जो शराफत चाहिए, उस शान से!

रज़िया : तो फिर बुला लूं?

डाली : शराफ़त खुश होगी।

रज़िया : और न बुलाऊं तो!

बहार : इन्सानियत नाराज़ होगी।

रज़िया : लेकिन इन्सानियत को राज़ी रखूं तो मेरी ज़िद खफ़ा होती है।

डाली : मगर ज़िद्द रखिएगा तो मुरव्वत बिगड़कर हवा होती है।

रज़िया : भई, जी तो नहीं चाहता, खैर, बुला लो! हां, अरी सुन! भला तू यह नहीं कह सकती कि जनाब, थोड़ी देर के बाद आना!

बहार : बस हुज़ूर, आपको भी माना! ऐ हुज़ूर, वह कोई फ़क़ीर है जो कह दूं कि साईं जी, ज़रा ठहर के आना!

[डाली जाती है और बाहर से फ़ीरोज को बुलाकर लाती है]

फ़ीरोज : (आकर)

अस्मत, हया-ओ-हुस्न को ताज़ीम अर्ज़ है।
ख़ातूने-ज़ीवकार को तसलीम अर्ज़ है!

बहार : सुना हुज़ूर!

फ़ीरोज : अल्लाह रे, ग़रूर! बंदापरवर! आपका मिज़ाज तो अच्छा है?

रज़िया : इनसे पूछो कि मुद्दा क्या है?

डाली : हुज़ूर, हमारी हुज़ूर इरशाद करती है...

फ़ीरोज : क्या इरशाद करती है?

डाली : कहती है कि ख़ामोशी से दिल सर्द है, तक़रीर से गरमायें।
क्या ग़म है, क्या काम है, क्यों आये हो, फ़रमायें॥

फ़ीरोज : इनसे कहो कि खुद पूछें।

डाली : इज़हार से मतलब है कि तकरार से मतलब?

फ़ीरोज : हज़रत से नहीं, हमको है सरकार से मतलब!

डाली : अजीब कंडे का मरदवा है!

बहार : अजी हज़रत, इसमें हुज्जत क्या है? आप इज़हारे-हाल करें!

फ़ीरोज : अपनी बेगम से कहो कि खुद सवाल करें।

डाली : और मैं जो सवाल करती हूं?

फ़ीरोज : तुम्हारे सवाल का जवाब मेरा नौकर देगा। क्या मैं कोई

गुलाम हू जो लौंडी-बाँदियों से हमकलाम हूं ?

डाली : सचमुच यह तो कोई बड़ा थान का टर्रा मालूम होता है।

फीरोज : लीजिए, मुलाकात तमाम, ऐसे बर्ताव को सात सलाम !

बहार : अजी, ठहरो, ठहरो !

फीरोज : नही, नही, बस जाने दो।

बहार : (रजिया से) ऐ हजूर, आप ही पूछ लीजिए न ! इतना खिचना भी क्या जरूर है ? मेहमान-नवाजी तो दुनिया का दस्तूर है !

रजिया : (बहार से) खैर, मैं खुद पूछती हूं और इस घर-आई बला से पीछा छुड़ाती हूं। (फीरोज से) लीजिए जनाब, मैं हाजिर हूँ।

फीरोज : अल्ला, अल्लाह ! क्या आलम है ! इस हुस्न पर जितना गरूर हो, कम है !

रजिया : जनाब, क्या कहना है, फरमाइए ?

फीरोज : बेअदबी माफ़ ! आंखों से पर्दा उठाइए।

डाली : आप कहिए न मेहरबान ! बातें आंखें सुनती हैं या कान ?

फीरोज : आंख से आंख मिलाके जो बात सुनी जाती है, वह बहुत जल्द समझ में आ जाती है।

बहार : देखा बहन, मरदवे इसी चाल से औरतों को फंसाते हैं।

रजिया : फरमायें आप आए हैं किस काम के लिए।
यह वक्त खास है, मेरे आराम के लिए॥

फीरोज : गफलत ने सब खतम किया, किस्मत ने जो दिया।
आराम कैसा, आप ने आराम खो दिया।
आया, चुराया, ले गया दुश्मन निकाल कर।
लाया हूं उससे छीन कर, रखिए संभाल कर।

[वसीयतनामा देता है]

रजिया : अरे, यह तो वही खोया हुआ वसीयतनामा है ! दगा,

फरेब ! धोखा ! मक्कारी ! दौड़ो, दौड़ो ! चोर ! चोर !

डाली : हैं ! हैं ! बेगम, कैसा चोर ? कैसा चोर ? क्यों चिल्लाती हो ? नाहक मुहल्ले वालों को बुलाती हो !

रज़िया : अरी मूई ! आज पता पाया कि इसी ने वसीयतनामा चुराया ! देखो, चोर निकल जायगा, अब पुलिस को बुलाओ !

बहार : होश में आइए, क्या चोर ऐसे होते हैं ?

रज़िया : और कैसे होते हैं ?

डाली : ऐ जनाब, यह रौब, यह दाब, यह आब, यह ताब, यह सूरत, यह सीरत, यह वज़ा, यह क़ता, यह शान, यह ज़बान ! यह तरकीब, यह तहज़ीब ! यह अखलाक ! यह अशफ़ाक ! और इन पर चोर का शुबाह ! खुदा की पनाह !

रज़िया : यह सच है, मगर···

बहार : कैसी अगर-मगर ? आपने भी ग़ज़ब ढाया ! अगर इसी शरीफ़ आदमी ने चुराया तो फिर वापस देने क्यों आया ?

फीरोज़ : भई वाह !—

इनायत हो तो ऐसी हो, मुरव्वत हो तो ऐसी हो !
किसी के घर में महमानों की दावत हो तो ऐसी हो !

रज़िया : हाय, हाय ! मैंने घबराहट में यह क्या किया ! अरी तुम दोनों मुंह क्या देखती हो ? अब इस हिमाकत का इलाज बताओ।

डाली : पुलिस को बुलाओ !

रज़िया : मुझे दिल्लगी में न उड़ाओ !

बहार : मुश्कें बंधवाओ !

रज़िया : आखिर उबरने की कोई सूरत ?

डाली : हाथ जोडिए और माफी मांगिए।

रज़िया : अरे वाह ! मैं हाथ जोड़ूं और माफी मांगूं ?

बहार : हाथ नहीं जोड़ती तो फिर पांव पड़िए। अब आगे बढ़िए।

रज़िया : तू तो जूतियां खायेगी। अच्छा, तू किस दिन काम आयेगी ?

जा और मेरी तरफ़ से माफ़ी चाह !

डाली : ऐं, मैं क्यों जाऊं ?

रज़िया : तो क्या मैं उनके आगे जाकर गिड़गिड़ाऊं और माफ़ी चाहूं ?

बहार : बेशक ! आपका ही तो कसूर है !

रज़िया : मेरा कसूर है, मगर माफ़ी भी मैं मांगूं, यह क्या ज़रूर है ?

डाली : लो सुनो, यह भी खूब !

मुई उल्टी हवा चलने लगी है अब ज़माने में।
खता बीबी करे, लौंडी पड़े झगड़ा चुकाने में ।।

बहार : (फ़ीरोज़ से) हुज़ूरे-आली !

फ़ीरोज़ : क्या कोई और सज़ा निकाली ?

डाली : हमारी बेगम साहबा से आपका कसूर हुआ, माफ़ कीजिए।

फ़ीरोज़ : बस अब जाइए, माफ़ कीजिए !

बहार : (रज़िया से) हुज़ूर, यह तो माफ़ी का नाम सुनकर टे में आ गए ! मैं ऐसों से दर गुज़री ! आप जाइए और समझाइए।

रज़िया : मुर्दार ! तुझे शर्म नहीं आती है ? एक अजनबी आदमी से मुठभेड़ कराती है !

डाली : जाइए तो सही ! देखिए, खुदा की कसम ! क्या सूरत पाई है ! गोया गुलफ़ाम का छोटा भाई है।

बहार : मगर हमारी बेगम भी सब्ज़परी से कम नहीं।

रज़िया : निगोड़ियो ! तुम दोनो में ज़रा शर्म नहीं ! (फ़ीरोज़ के पास जाकर स्वगत) ऐ कुर्बान ! वाकई हुस्न है या खुदा की शान ! (प्रकट) जनाबे-आली !

फ़ीरोज़ : हुज़ूरे वाला !

रज़िया : आप क्या ख्याल फरमा रहे हैं ?

फ़ीरोज़ : अपनी गल्ती पर शर्मा रहे हैं।

रज़िया : मुझे अपनी हिमाकत पर रोना आता है।

फ़ीरोज़ : और मुझे आपके रोने पर हंसी आती है।

रज़िया : आप मुझे झेंपाते हैं।

फीरोज़ : आप मुझे बनाती हैं।

रज़िया : मैं अपने वर्ताव से सख्त शर्मसार हूं। कसूरवार हूं, माफ़ी की ख्वास्तगार हूं।

फीरोज़ : बानो, अगर ऐसे खूबसूरत लफ्ज़ों में माफ़ी मांगी जाय तो किसको देने से इन्कार है ?

रज़िया : आप यूं फरमायेंगे तो खतावार दिल और भी शुक्रगुजार होगा।

फीरोज़ : इस शुक्रगुज़ारी का शुक्रिया! मगर वसीयतनामे से आप खबरदार रहिए। अर्ज यह है कि सवलत और फज़ीहता से भी होशियार रहिए।

रज़िया : यह वसीयतनामा किससे आपको हाथ आया ?

फीरोज़ : माफ कीजिए, मैं अभी यह नही बता सकता कि यह किससे लाया, कहां से पाया! वक्त आयेगा तो आपको सब कुछ मालूम हो जायगा। लीजिए तसलीम !

रज़िया : इतनी जल्दी ? खुदा की क़सम, आपके जाने से तो महफिल सूनी हो जायगी।

डाली : (स्वगत) महफ़िल तो नही, अलबत्ता इश्क के थर्मामीटर की गर्मी दूनी हो जायगी।

फीरोज़ : मुअज़्ज़िज़ (आदरणीया) बानो ! मुझे एक निहायत जरूरी काम अलविदा कहने के लिए मजबूर करता है वरना चमकते हुए चांद, और महकते हुए फूल और चहकती हुई कोयल के पास से जुदा होना कौन शख्स बखुशी मजूर कर सकता है ? और अपना दिल रंजूर कर सकता है ?

रज़िया : तो मैं उम्मीद रखूं कि आप इस गरीबखाने पर फिर दोबारा तशरीफ़ लायेंगे ? जरूर मेहरबानी फरमायेंगे ?

फीरोज़ : अजी, हम तो सीधे मुसलमान हैं, जब एक बार जन्नत का पता मिल गया तो हज़ार बार आयेंगे !

रज़िया : मैं आप की तशरीफ-आवरी से खुश हूंगी।

फीरोज़ : आप खुश होंगी तो मैं अपने नसीब को मुबारकबाद दूंगा।

रज़िया : आप तमाम मर्दों में एक हैं!

फीरोज़ : आप तमाम औरतों में एक हैं। अच्छा याद रखिएगा, कहीं भूल न जाइएगा। खुदा हाफ़िज़!

रज़िया : खुदा हाफ़िज़।

[फीरोज़ जाता है। उसके जाने के बाद रज़िया खुशी से गाती है]

शादमां! शादमां! मेहरबान!
जग में तुम सुख पाओ! जाओ, आ···आ···आओ!
याद करूंगी सुबह-शाम[1] मुझको समझिएगा गुलाम!
याद रखूंगी मैं मदाम, लीजिए मेरा सलाम!
शादमां! शादमां!···
आन मिला था इक परदेसी! भूल न जाना उसको जी,
दर्शन बिन तरसेंगी अंखियां, फिर मुखड़ा दिखलाना जी।
जाना जी, आना जी! शादमां! शादमां!···

[सब जाती हैं]

[पटाक्षेप]

1. हमेशा

पांचवां दृश्य

[स्थान—मन्वासी का मकान । हुसना मर्दाने भेस में एक दासी के साथ आती है]

हुसना : रोज की तरह आज भी गहरी नीद मे है ?

दासी : हां, रोज की तरह आज भी गहरी नीद में है।

हुसना : खौफनाक मर्ज !

दासी : पहले सरकार का नाम लेकर पुकारा । फिर पहनने के लिए स्याह चोगा उतारा । उसके बाद लैम्प उठाया, फिर मेज की दराज से खंजर निकालकर कमर से लगाया, फिर ख्वाबगाह से चलती हुई दीवानखाने में आई। फिर घबराई और वहा से लौटकर सेहन में आई। कुछ देर ठहरो, फिर बढी, फिर रुकी, फिर मुड़ीं। फिर रेंगती हुई गुसलखाने में पहुँची ।

हुसना : वहां क्या किया ?

दासी : इस कदर रगड़-रगड़ के हाथो को धोया कि अगर इतने पानी से आप किसी हब्शी को नहलाते तो उसके कुदरती रंग-ओ-रोगन जरूर घुल और साफ होकर बदल जाते।

हुसना : यह सब कुछ नीद में करती हैं ?

दासी : मुर्दों की-सी नीद में।

हुसना : खुदाई इन्तिक़ाम !

दासी : देखिए, देखिए, वह इधर ही आ रही है ! उसकी हालत उसकी बदकारी का खाका उडा रही है!

हुसना : क़सम उस विधाता की ! वह गहरी नींद में है।

दासी : सुनो, कुछ बोलती है या वैसे ही किसी चीज़ को टटोलती है ?

[अब्बासी का प्रवेश]

अब्बासी : बुझा दो, मेरे प्यारे बुझा दो, मैं तुमसे कहती हूँ, यह चिराग़ अब बुझा दो !

दासी : सुनती हो ?

अब्बासी : चोर अंधेरे में आता है। गुनाह रोशनी में पहचान लिया जाता है। बुझा दो ! वक्त को अंधा बताता है। अब चिराग़ बुझा दो। अरे, अभी तक यह बाकी है !

दासी : (हुसना से) देखो, देखो वह अपने हाथों को किस तरह रगड़ रही है ! कमबख्त ! इसको वहम हो गया है कि नवाबे-आज़म के बेगुनाह खून से अभी तक उसका हाथ भरा हुआ है।

अब्बासी : ऐ लानती दिमाग़, दूर हो, मैं कहती हूं। *(घंटी बजाती है)* एक···दो···अरे, अभी वक्त है। काम का यही वक्त है। शर्म ! शर्म ! मेरे प्यारे, शर्म ! मर्द के सीने में औरत का दिल कौन देखता है ? किसको मालूम होता है ? किसे ख्याल है कि बूढ़े जिस्म में इतना खून होगा ?

हुसना : (दासी से) जितना इसे ख्याल सता रहे हैं, उससे ज्यादा जहन्नम भी गुनहगार को तकलीफ़ नहीं दे सकता।

अब्बासी : क्या यह हाथ कभी साफ न होंगे ? क्या दुनिया के तमाम समन्दर भी मिलकर मेरे हाथ से यह खून का दाग़ धो सकते हैं ? मेरे साहब, तुम चौंक कर सब बिगाड़ दोगे ! कांपो नहीं, डरो नहीं, दाग़, लहू का दाग़, सुर्ख दाग़ !

हुसना : औरत ! कमबख्त इन्सान इससे ज्यादा अपने दुश्मन को क्या सज़ा दे सकता है ?

अब्बासी : सल्तनत के घर में एक औरत थी, वह अब कहां है ? उसे

अभी तक खून की बू आ रही है। दुनिया के सारे किस्म के इतर इस हाथ को खुशबूदार नहीं कर सकते। कौन है? छुरी फेंक दो, हाथ धो डालो। चुप, चुप ! चुप ! (जाती है)

दासी : अब आपकी इसकी बीमारी के बारे में क्या राय है ?

हुसना : अगर मेरी अक्ल अभी दुरुस्त है तो मैं यह कह सकती हूं कि अब्बासी अब अच्छी नहीं हो सकती।

दासी : आपका यह मतलब है कि इसका मर्ज लाइलाज है ?

हुसना : वह हकीम के बदले आबिद (धर्मगुरु) और दवा के बदले दुआ की मोहताज है।

दासी : यह आपने कैसे समझा ?

हुसना : क्या उसका वह दिमाग है ? क्या वह चंद चुभने वाले नश्तर नहीं रखती है ? क्या वह जो कुछ कर रही है, वह होश में कर रही है ? क्या वह बेहोश नहीं है ?

सखी : (आकर) गजब ! मुसीबत ! सख्त मुसीबत ! गलती से मौत, जवान मौत !

हुसना : क्या है, क्या है ?

सखी : बेगम का हाल बिलकुल बेहाल है।

दूसरी : एक शीशी में जहर पड़ा हुआ था, बेगम ने दवा के धोखे में पी लिया।

हुसना : क्या जहर ! हा हा हा ! यह है अपने हाथ से अपनी सजा ! यह है खुदा का कहर !

दासी : मेरे खुदा ! वह देखिए, वह आ रही हैं !

[अब्बासी हाथ में शीशी लिए आती है]

अब्बासी : पानी पानी ! आह पानी ! मेरे बदन से चिंगारियां निकल रही हैं। मेरे सीने में आग की भट्ठी जल रही है जिसमें मेरी रूह और तमाम ताकतें लकड़ियों की तरह जल रही हैं, मेरी आंतें जोश खा-खाकर उबल रही हैं !

दासी : हजूर, क्या हाल है ?

अब्बासी : बदनसीब हू । नामुराद हूं ! तनहा छोड़ दी गई हूं । क्या तुम मे कोई ऐसा नही जो हिमालय पर्वत की सबसे बड़ी चोटी से जमी हुई बर्फ काटकर मेरे जलते हुए हलक़ मे रखने के लिए लाए ? क्या कोई तुम मे ऐसा नहीं जो इस मुल्क के दरियाओ को अपना रास्ता बदलकर मेरे जलते हुए सीने में से गुजरने के लिए समझाये ?

सखी : अफसोस !

अब्बासी : अफसोस क्यों करते हो ? मैं तुमसे सल्तनत नही मांगती, बहिश्त नही तलब करती, सिर्फ ठण्डा पानी मांगती हू । मुझे दो घूट पानी दो, पानी ! मैं प्यासी हूं ।

दासी : अगर मेरे आंसू सर्द होते तो मैं अपनी दोनों आंखें आपके सीने पर निचोड़ती !

सखी : (पानी लाकर) यह लीजिए । (गिलास देती है)

अब्बासी : यह पानी है, जहर है, आग है, तेजाब है ! आह ! प्यास ! प्यास ! आह ! अरे, मैं मरती हूं, मैं बेकरार हूं । खुदा की क़सम, अगर कोई एक गिलास ठंडे पानी का ला दे तो मैं अपना हुस्न-ओ-नेमत-दौलत सब कुछ देने को तैयार हूं ।

हुसना : (साइड से) देख, ऐ आंख, देख ! दुनिया और दुनिया के ऐश-ओ-आराम की कीमत मौत के वक्त समझ मे आ जाती है । जिन चीजों के लिए इसने ऐसे-ऐसे गुनाह किए, उन्हें आज यह एक गिलास पानी पर बेचने वाली है !

अब्बासी : आओ, देखो, देखो ! शैतान मुझे आखें दिखाते हैं । फरिश्ते आग के कोड़ों से डराते हैं ! जाओ, जाओ, वापस जाओ ! अब मेरे पास से चले जाओ ।

हुसना : (साइड से) जहर इसके खून पर और गुनाह इसके दिमाग पर हमला कर रहे हैं ।

अब्बासी : मौत ! मौत ! मुझे क्यों पकड़ती है ? मैं अभी जवान हूं । मेरे पास दौलत है । मैं अभी मरना नही चाहती ! जा, जा,

अब मुझसे दूर टल जा !

हुसना : (स्वगत) *मौत और जिन्दगी की जंग शायद अब खत्म हुआ चाहती है।*

अब्बासी : पानी ! पानी ! जहर मौत के हाथ का आतिशी खंजर है। जालिम, मेरी रगोंकी रस्सियों को, जिनसे जिन्दगी का जहाज बंधा हुआ है, क्यों काटे डालता है !
मेरे कल्ब-ओ-जिगर में रख दिया शोला जहन्नम का।
बदला लेता है मुझसे जहर बनकर खून आजम का।।

[धमाके की आवाज के साथ नवाब-आजम की रूह दिखाई देती है]

वही, वही ! क्या कयामत से पहले जमीन को मुर्दे उगलने की इजाजत मिल गई है ? जा, जा, अपनी कब्र मे जा। क्यों आया है ? तुझे किसने बुलाया है ? मेरे पास से हट जा !

दासी : (अब्बासी से) हजूर किससे बातें कर रही हैं ?

अब्बासी : वह देखो, उसे देखो, सफेद कफन, पीला चेहरा, डरावनी आंखें ! दूर हो, दूर हो ! ऐ जिन्दगी के ख्याली साये, दूर हो ! कौन कहता है कि मुझसे ऐसा बुरा काम हुआ है ? तेरे पास क्या सबूत है कि इस खंजर से ही तेरा खून हुआ है ? (खंजर निकालती है)

हुसना : छीनो, छीनो ! इसने खंजर कहां से पाया ?

दासी : यह वही खंजर है जो मेरे सामने इसने मेज से उठाया।

सखी : हजूर, मुझे दीजिए।

अब्बासी : झूठी है, ऐ रूह ! तू झूठी है। कोई सबूत नहीं, कोई दाग नहीं, मैंने मारा, नवाब-आजम को मारा ? क्या, क्या कहती है ? इस तरह मारा ! (खंजर मारकर मर जाती है)

[पर्दा आहिस्ता-आहिस्ता गिरता है]

छठा दृश्य

[स्थान—रजिया का मकान। अन्दर से डाली और बहार बात करती आती हैं]

डाली : बहन, बेगम तो बिल्कुल बदल गईं !

बहार : हां, देखो ना, चिकने-चिकने गाल देखकर फिसल गईं !

डाली : मैं तो अब खूब बनाऊंगी !

बहार : और मैं क्या न छकाऊंगी !

डाली : बस, हम तो मर्दों के चरित्र मान गए !

बहार : ऐ बहन, खुदा बचाये, यह दाढ़ी-मूंछ वाले तो औरतों को फंसाने के सैकड़ों हथकंडे जानते हैं !

डाली : (सामने से रजिया को आते देखकर) लीजिए, वह आ रही हैं।

बहार : हा ! बेगम का चेहरा क्यों जर्द है ?

डाली : क्या सर में दर्द है ?

रजिया : (आकर) आह !

बहार : कुछ तो बताइए।

रजिया : जाओ !

डाली : कुछ तो फरमाइए।

रजिया : मगज न खाओ।

बहार : जरा नब्ज तो दिखाइए।

रजिया : मत सताओ।

डाली : हजूर, मैं तो औरतों की दाई हूं।

बहार : और मैं विलायत से डाक्टरी पास करके आई हूं !
रजिया : अरी ! तुम दोनों क्या मुझे बनाती हो ?
डाली : कहिए—
बहार : उल्फ़त का नाम सुन के बिगड़ना किधर गया ?
नाराज होना, रूठना, लड़ना किधर गया ?
चाहत से थी जो तुमको अदावत, वोह क्या हुई ?
मर्दों से थी जो आपको नफ़रत, वोह क्या हुई ?
रजिया : मत पूछ वोह गरूर, वोह गुस्सा किधर गया !
वोह इक नशा था, जो मेरे सर से उतर गया !

[सब मिलकर गाती हैं]

जाओ सखी, पिया को ले आओ ।
श्याम को मेरे आंगन लाओ ।
आज तो मन में चाव हैं न्यारे !
रोज पिया करते हैं मुझसे सारे !
गैरों से मिलना-मिलाना, जलाना !
जाओ सखी······

[फजीहता फकीरी के भेष में चुपचाप प्रवेश करता है]

फजीहता : (स्वगत) अल्लाह ! कौन होगा मुझ-सा सियाना फर्जाना ! वल्लाह ! वह तदवीर सूझी है कि वाह ही वाह ! रजिया को धोखा देकर जंगल मे ले जाता हूं और वहां जबर्दस्ती उसका सवलत से निकाह पढ़वाता हूं । जब रजिया सवलत के निकाह में आ गई तो फिर सवलत के पौ-बारह हैं और उसका जो कुछ माल है, वह हमारा है । फिर क्या ! पांचों घी में और सर कड़ाही में, घड़ चूल्हे में और मियां फजीहता ऐश-इशरत के झूले में ! अरे, कोई सामने आ रहा है ! बेटा

फजीहता, अब पूरी करामात दिखाओ। फकीरी का भेस लिया है तो सचमुच के फकीर बन जाओ। दम मदार, गम मदार, माई की खैर, माई की खैर, बला चट ! सफा चट ! अल्लम चट, गल्लम चट ! तुम चट, हम चट !

[सहेलियां आती हैं]

डाली : अरे, मूए बन्दर ! क्यों आया है घर के अन्दर ?

फजीहता : दमा दम मस्त मछंदर, शाह कलंदर ! माल मछंदर बाहर-अन्दर, पाले बन्दर, पूरे मन-भर खाये चकंदर ! जाने अंतर मंतर, जंतर ! सात समंदर पार करे, जरदार करे ! कंगालों को, बदहालों को, क़व्वालो को, सरवालों को, वेतालों को, बम्बई के नाटक वालों को रश्के-दारा, फ़ख्रे-सिकंदर ! दमा दम मस्त कलंदर !

बहार : अरे, मूए ! डफाली के ढोल ! कुछ मतलब तो मुंह से बोल ! हमारा मकान तकिया समझा था या मंदर जो चला आया घर के अन्दर ?

फजीहता : बाबा, एक पैसा लूंगा और सौ गाली दूंगा। गाली भी गाली ! दुनिया भर से निराली ! आधी गोरी आधी काली !

बहार : लो बहन डाली, मूए नफरे को दो पैसा और खाओ गाली !

फजीहता : अरी, ओ टूटी हुई टमटम ! तू नहीं जानती कि हम कौन हैं ? हमारे ही हुक्म से हवा में जहाज चलते हैं, सूई के नाके से ऊंट निकलते हैं, हमारी बददुआ से आदमी पिसकर मैदा हो जाता है। हमारी करामात से बांझ औरत के घर लड़का पैदा होता है ! हमारी 'उफ़ !' से पत्थर पिघलता है, हमारे पसीने से चिराग़ जलता है !

डाली : तू क्या चलाता है झूठ की रेल ? अरे मूंए ! तेरा पसीना है या मिट्टी का तेल ?

फजीहता : अरी चुप, चुप ! कल की लड़की ! तू फकीरों का रुतबा क्या

जाने ?

बहार : जानती क्यों नहीं ? आजकल लड़कियां तो पैदा होते ही सब कुछ पहचानती और जानती हैं।

फ़जीहता : सच है बाबा, बल्कि जानने के बाद पैदा होती हैं !

[रज़िया का प्रवेश]

रज़िया : यह क्या शोर मचा रखा है ?

डाली : ऐ हुज़ूर, इस बेढगे, ज़माने भर के लफंगे से पूछिए कि तकिया समझा था कि मंदर जो चला आया घर के अन्दर !

फ़जीहता : भूल है, भूल है। खाक की पुतली ! तेरी आंखों में धूल है ! मिट्टी चुन-चुन महल बनाया, लोग कहें घर मेरा। न घर मेरा, न घर तेरा, चिड़िया रैन-बसेरा ! अल्लाह के प्यारे, तेरी नगरी में बोलता है कौन ?

रज़िया : ज़रा शक नहीं, पूरा ख़ुदा-रसीदा है ! हज़रत सलामत ! आपका नाम ?

फ़जीहता : या माबूद ! सामौजूद ! बेटा, नाम तो अल्ला का है मगर इस मुश्ते-ख़ाक का नाम चम्पतसिंह गायब गल्ला है !

डाली : चम्पतसिंह गायब गल्ला ! आधा तीतर, और आधा बटेर !

फ़जीहता : यह भी तेरी समझ का है फेर !

रज़िया : मगर आपकी ज़ात हिन्दू है या मुसलमान ?

फ़जीहता : आधा हिन्द, आधा मुसलमान ! दिन को यहूदी और रात को क्रिस्तान ! आधा क़ब्रिस्तान, आधा श्मशान !

रज़िया : और मियां, मज़हब ?

फ़जीहता : मज़हब ! मज़हब रकाबिया !

रज़िया : ज़रा इस रकाबिया मज़हब के अक़ीदे (विश्वास) तो बयान कीजिए !

फ़जीहता : पहला अक़ीदा—खा मोट ! दूसरा—भर पेट ! तीसरा जल्द समेट ! चौथा दे भेंट ! पांचवां बन सेठ, छटा आराम से

लेट !

रजिया : यह तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया ।

फजीहता : यह बड़ी दूर की बातें हैं, तेरे ख्याल में नहीं आयेंगी !

रजिया : या साईं दाता ! मुझ पर करम फरमाइए । कोई ऐसी तदबीर बताइए जिससे मेरा प्यारा मेरे काबू में आ जाय ।

फजीहता : ऐ लड़की ! हम जानते हैं, तुझे जिस बात का ग़म है । मगर यकीन रख कि इस ग़म की मियाद बहुत कम है । इसलिए अब जा, अपने ओढ़ने की शाल में पांच सौ रियाल और थोड़ी-सी माश की दाल डाल और फकीरों के सवाल के मुताबिक सदका निकाल ! फिर देख कि क्या होता है हाल !

[रजिया जाती है]

डाली : साहब, मुझ पर भी मेहरबानी फरमाइए, जरा मेरे शौहर का पता बताइए !

फजीहता : अफसोस ! तेरे शौहर ने परलोक का टिकट लिया है !

डाली : हैं ! वह कैसे ?

फजीहता : वह तकदीर का हेठा ! उल्लू का बेटा, खाकर मोटर का झपेटा, वह खाक के बिस्तर पर मौत की गोद में जा लेटा !

डाली : हाय, हाय ! मर गई ! मैं बर्बाद हो गई !

रजिया : (आकर) या हज़रत, लीजिए यह शाल और वह तमाम माल-ओ-मताल !

फजीहता : जा बेटा, अल्ला तेरा भला करेगा ! आज रात को नौ बजे अपने बाग़ के पिछवाड़े शाह बूलर के मज़ार पर आना, जो तावीज दें, ले जाना !

रजिया : शाह साहब, मैं तो वहां नहीं जा सकती ।

फजीहता : तो फिर हमारे पीर का मजार यहां नहीं आ सकता !

रजिया : मगर दाता, मैं अकेली किस तरह आऊंगी ?

फजीहता : अच्छा, तो बेटा, दो सहेलियों को साथ लाना । जा बेटा,

अल्ला तेरा भला करेगा।

[सब जाते हैं]

फजीहता : (स्वगत) तेरा सत्यानास करेगा ! (शाल को देखकर) वाह ! वाह ! इसमें तो सितारे ही सितारे भरे हैं ! महल बनाऊं तो आसमान से ऊंचा बने ! ऐश पर आऊं तो बरसों गाढ़ी छने ! —

फजीहता ने बदलकर भेस, जब धूनी रमाई है !
तो मुद्दत बाद जंगली फ़ाखता कब्जे में आई है !

[जाता है]

[पटाक्षेप]

सातवां दृश्य

[स्थान—जंगल। डाकू मिलकर देवी के मंदिर में भजन गाते हैं।]

आओ दिलबर प्यारे जी, मैं तोरे बलिहारियां।
मदवा पीओ मोरे प्यारे जी, मैं तोरे बलिहारियां।
आओ प्यारे नैन में, मूंद पलक तोहे लूं।
नाहिं देखूं और को, न तोहे देखन दूं॥
आओ दिलबर······

एक : आओ यारो, सब यहां बैठ जाओ और कंचनी को बुलाओ, उससे गाना सुनें।

[रण्डी साजो-सामान के साथ प्रवेश करके आदाब बजा लाती है और गाना शुरू करती है]

मजा था किस गजब का देखना जोरे-सितमगर में।
शहीदे-नाज को नींद आ गई आग़ोशे-खंजर में॥
निगाहें मिलते ही ग़श आ गया मुश्ताके-जानां को।
खुदा जाने भरा क्या था फंसूं चश्मे-फसूंगर में॥
जगह दी इन बुतों को हमने अपने खाना-ए-दिल में।
बनाया हमने बुतखाना खलील अल्ला के घर में॥
कभी वालशमाश पढ़ते हैं कभी वाललैयल मसो को।
हुए हैं हाफिजे कुरान ख्याले-रुए दिलबर में॥

हुआ क्या है अगर ग़ैरों पे यह लुत्फो-करम तेरा।
तुझे लेना है बिलआखिर, तू है मेरे मुकद्दर में ॥

[डाकुओं का सरदार राघू आता है]'

राघू : यारो, आज एक मुसटण्डा हाथ में आया है। उसे माता जी की भेंट दें। जै की देवी की जै ! देवी जै ! (सब जाते हैं)

[पटाक्षेप]

आठवां दृश्य

[स्थान—पहाड़ी पर देवी का मंदिर। पुजारी और डाकू फजीहता को पकड़ कर लाते हैं]

फजीहता : (स्वगत) दुनिया में भलाई का बदला बुराई है, नेकी बड़ी मनहूस कारंवाई है। मैंने रज़िया और सवलत को मिलाया तो मेरे हिस्से में खुशी के बदले गम आया! रास्ते में जाते-जाते भेड़िये लिपट गए! मुझ फरिश्ता-ए-रहमत को ये भूत चिमट गए! अब खुदा जाने, जहन्नम में डालेंगे या खुद ही मुझको खायेंगे! भाइयो! तुम कौन हो?

एक : बात के सच्चे!

दूसरा : क़ौल के पक्के!

फजीहता : (आड़ देकर) गधे के बच्चे!

तीसरा : आजादी के चाहने वाले!

फजीहता : तेरा नाम क्या है, बाबा शीरी-गुफ्तार!

तीसरा : ठाकुरदास!

फजीहता : बाबा ठाकुरदास!

पहला : तुम्हारा नाम?

फजीहता : हमारा नाम खब्तुलहवास!

पहला : बाप का नाम?

फजीहता : अमलतास बिन अलमास इब्न खन्नास!

दूसरा : मुल्क?

फज़ीहता : मद्रास।

तीसरा : बाल-बच्चे ?

फज़ीहता . उनचास।

तीसरा : यानी ?

फज़ीहता : एक कम पचास।

पहला : ओ बाप रे ! इसकी जोरू है कि बच्चे देने वाली मुर्गी ?

चौथा : चलो अब इस झगडे को छोड़ो और गोपाल घोष को बुला लाओ। जब तक वह आये, सब गाओ, देवी को रिझाओ !

(सब गाते हैं)

देवी ! आज पूजन काज हैं मिले तोरे अंगन,
हैं मन में मगन, लगे हैं नाचन गायन !
तोरे सब हैं दास, चरण के पास, पूरन कर आस !
मेरी माता ! बाजे डंका तेरा हर आन !
सोना रूपा मोती मूंगा लाते पूजा को तेरी शान !

फज़ीहता : **(स्वगत) अरे, चूल्हे में झोंको यह सब सामान।**
हुआ ठण्डा, मुसटण्डा फज़ीहता खां।।
बेटा फजीहता, जब तेरी शादी हुई थी, तब भी इतनी धूम-धाम न मची थी···!

[गोपाल घोष का प्रवेश]

गोपाल : जै देवी की ! जै देवी की !

फज़ीहता : **(गोपाल को देखकर स्वगत)** अरे, बाप रे ! यह आदमी है या देव का बच्चा ?

एक : जै जै हनूमान, अस्थान के खंभे !

फज़ीहता : हे हे, परलोक की रेल के बम्बे !

दूसरा : जै जै, माता जी के सांड !

फज़ीहता : हे हे, भैरों जी के भांड !

तीसरा : जै जैकार, महासुख पाई !

फज़ीहता : बेटा फज़ीहता, अजल अब आई !
गोपाल : चलो दाता, आगे बढ़ो !
फजीहता : (स्वगत) हां, चलो, तुम्हारे बाप का माल है, ले चलो !

[गुरु का प्रवेश]

सब : गुरु जी, नमस्कार !
गुरु : जीते रहो बच्चा ! जीते रहो। क्या हो रहा है ?
फज़ीहता : हो क्या रहा है, हमारी शादी है। बरातियों के लिए खाना नही तो हमारे खाने की फिकर में हैं।
एक : गुरु जी, देवी को भेंट दे रहे हैं !
गुरु : नहीं बाबा ! यह ठीक नहीं। इन्सान की क़ुर्बानी का हुक्म देवी ने किसी को नहीं दिया।
फज़ीहता : यह खुदापरस्त भेड़िया ठीक कहता है।
चौथा : बराबर, सबका हुक्म दिया है।
फज़ीहता : तेरे बाप के यहां सुनहरी हर्फों में लिखा हुआ परवाना आया होगा ! मरदूद कहीं का !
चौथा : चुप रहो, नहीं तो मार डालेंगे।
फजीहता : यह तो पहले ही फैसला हो चुका है।
गुरु : (फजीहता से) बेटा, तेरा नाम ?
फजीहता : शेख फजीहता।
गुरु : बाप का नाम ?
फज़ीहता : मिर्जा मजीदा।
गुरु : दादा का नाम ?
फज़ीहता : शेख हमीदा।
गुरु : ठिकाना ?
फज़ीहता : बम्बई, ग्रांड रोड !
गुरु : अच्छा, बाबा, तुम लोग हमारी बात नहीं सुनते तो हम लानत करके जाते है। जैसा करोगे, वैसा पाओगे और माता के श्राप

से फ़ना हो जाओगे !

फ़जीहता : पर मुझे कहां छोड़ चले ? क्यों फ़कीर के लिए क्या हुक्म है ?

तीसरा : तुम्हारे लिए यही हुक्म है।

फ़जीहता : तुम हमको छोड़ दो।

एक : छोड़ दें तुमको ? मौत के दरिया में न छोड़ें ?

फ़जीहता : नहीं भाई, मुझको तो ज़िन्दगी के पुल पर ही खड़ा रहने दो !

[पहाड़ के फटने की आवाज़]

सब : अरे, भागो, भागो !

[भगदड़ मच जाती है। सब डाकू भाग जाते हैं।]

[पटाक्षेप]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—जंगल। फीरोज अपने सिपाहियों के साथ आता है]

सिपाही : बहादुर सरदार, मैंने अपने एक जासूस से सुना है कि फजीहता रजिया को जंगल में बहकाकर लाया है और सवलत के साथ उसकी शादी कराना चाहता है। अगर आप उसकी मदद को न जायेंगे तो बेचारी रजिया जरूर क़त्ल कर दी जायेगी।

फीरोज : अच्छा जाओ और फौरन फजीहता को गिरफ्तार करके लाओ। सवलत से मैं खुद समझ लूंगा।

[फीरोज और सिपाही जाते हैं। दूसरी तरफ से सवलत और रजिया का प्रवेश]

सवलत : रजिया, इधर देखो, इस जगह को देखो, इस वक्त को देखो। यह एक मैदान है।

रजिया : हां।

सवलत : और बिल्कुल सुनसान है।

रजिया : हां सवलत, रात आधी से ज्यादा गुजर चुकी है।

सवलत : कुदरत के सिवा तमाम दुनिया मर चुकी है और तुम औरत हो !

रज़िया : ठीक !

सबलत : और तनहा हो !

रज़िया : यह भी ठीक !

सबलत : अगर किसी के हाथ मे खंजरे-आबदार हो ?

रज़िया : (डरकर) या अल्ला !

सबलत : और तुम्हारा ख़ून करने को तैयार हो ?

रज़िया : ओ ख़ुदा !

सबलत : चुप, सुनो ! ऐसी जगह, ऐसे वक्त, अगर ऐसा वाक़ा हो, तुम अपनी हिफ़ाज़त करने से लाचार हो, खंजर के एक ही वार में रगों से रूह बाहर निकाल दी जायगी और लाश जंगली जानवरों की ख़ुराक बनने के लिए किसी गढ़े में खेंच कर डाल दी जायगी।

रज़िया : मुझे तुम्हारी बातो से खौफ़ मालूम होता है।

सबलत : बेशक ! तुम खौफ़ की हालत में हो।

रज़िया : तो मुझे इस खौफनाक हालत से निकालो, भाई हो, रहम करो, बचा लो !

सबलत : एक शर्त से, एक ज़रिए से।

रज़िया : बोलो, कहो, इज़हार करो।

सबलत : वह शर्त यह है कि तुम मुझे प्यार करो !

रज़िया : मैं शर्त को ज़रूर निभाऊंगी। ख़ुदा की कसम ! मैं तुमको चाहती हूं और आज से ज्यादा चाहूंगी।

सबलत : मगर कैसे ?

रज़िया : जिस तरह एक बहन अपने भाई को चाहती है, वैसे !

सबलत : चुप रहो। मैं ऐसे चाहने को नहीं चाहता ! अगर अपनी हालत से ख़बरदार हो, इस जगह से बेज़ार हो, आज़ादी से प्यार हो, तो एक बीवी की तरह मुहब्बत करने को तैयार हो !

रज़िया : या अल्ला ! तुम क्या चाहते हो ? मेरी अस्मत (इज्जत) की बर्बादी ?

सवलत : नहीं। इज्जत, मुहब्बत और शादी ! (हाथ पकड़ लेता है)

रज़िया : दूर हो, मुझे छोड़ दो, जाने दो। जिसका ज़ालिम हाथ अपने बाप के खून से रंगा है, उससे शादी करना मुहब्बत की बेइज्ज़ती और निकाह की तौहीन है।

सवलत : रज़िया, अब ज़िद्द बेसूद है, गवाह और क़ाज़ी इसी दरख्त के पास मौजूद हैं। अगर इन्कार होगा तो फिर यह खजर तुम्हारे जिगर के पार होगा। और इसी मैदान में तुम्हारा मज़ार होगा। अगर तुम मर गई तो तुम्हें यहां कोई रोने वाला भी नहीं।

रज़िया : हक़ पर मरना अच्छा, किसी के मुंह का नवाला बनना नहीं।

सवलत : जिन्दगी और मौत में अब फासला दो हाथ है।

रज़िया : चार दिन की चांदनी और फिर अंधेरी रात है॥

सवलत : याद रख, हूं सानी-ए-ज़ुहाक ज़ुल्म-ओ-जबर में।

रज़िया : जबर का अपने नतीजा पायेगा तू कबर में !

सवलत : देख तू इस वक्त है अपनी क़ज़ा के सामने !

रज़िया : ज़ुल्म कर, इन्साफ होगा उस खुदा के सामने !

सवलत : मिटा दूंगा तुझे, तू क्या है, तेरी ज़िद्दपरस्ती क्या ?

रज़िया : खुदा चाहे तो यूं उड़ जाय, तू क्या, तेरी हस्ती क्या ?

सवलत : मेरी सुन, मान गर दुनियां में कुछ दिन और जीना है।

रज़िया : करे जो मर्द होकर ज़ुल्म औरत पर, कमीना है।

सवलत : बस, मुर्दार, बदकार, अगर शादी से इन्कार है तो इस दुनिया में तेरा ज़िन्दा रहना बेकार है, तू मौत की सज़ावार है !

रज़िया : ओ खुदा ! ओ खुदा ! मेरी मदद फरमा और इस मूज़ी के हाथ से बचा !

सवलत : हो चुका, नाला-ओ-फरियाद, अब तो सर झुका।

[आगे बढ़कर खंजर मारने को हाथ उठाता है।]

[फीरोज का प्रवेश]

फीरोज़ : बस, वहीं रोक क़दम, फेंक दे खंजर अपना।

सवलत : कोई दादाद का हमज़ाद कि फरऊन है तू ?
मौत का ग्रास ? जल्द बता, कौन है तू ?

फीरोज़ : मैं वो हूं, मस्त हाथी को जो गोमशाल दे।
मैं वो हूं, जो पहाड़ को ठोकर से टाल दे॥
दोज़ख का ज़लज़ला हूं, अज़ाबे-खुदा हूं, मैं।
तेरे लिए बला हूं, सज़ा हूं, क़ज़ा हूं मैं॥

सवलत : जा, जा, बदकार ! क्या तू दुनिया से बेज़ार है, जो मौत का तलबगार है, जो मेरे मुकाबले के लिए तैयार है ?—
सामने इक अजदहा-ए-खूंखार के हो सोचकर।
मौत का हूं दांत, खा जाऊंगा तुझको नोचकर॥
ठोकरें खाता फिरेगा फूस में और घास में।
चल गया गर हाथ तो यह जिस्म होगा खाक में॥

फीरोज़ : बस, बस, रहने दे यह ज़बांदराज़ी ! क्या तू नहीं जानता, यह तेगे-असफ़हानी ! दुश्मने-जिन्दगानी ! दमभर में करती है फानी ?—
तुझ जैसे हज़ारों को पछाड़ा है. पछाड़ा है क़ज़ा ने।
लोहे के लिए आग बनाई है खुदा ने॥
वह दम में फना करता है मग़रूर बशर को।
मच्छर ने कुचल डाला था, नमरूद के सर को॥

सवलत : बदकारजान ! तुझे इस औरत की मदद से क्या सरोकार है ?
क्या तू इसका दोस्त या रिश्तेदार है ?

फीरोज़ : बेशक हूं ! खुदा ने दुनिया एक ही आदम से पैदा फरमाई है। इसलिए हरेक आदमी एक-दूसरे का भाई है।

सवलत : तू मुझे बेवकूफ मालूम होता है।

फीरोज़ : और तू मुझे नामर्द मालूम होता है।

सवलत : *अगर तू अक्लमंद होता तो पराई आग में कूदना हरगिज पसंद न करता।*

फीरोज़ : अगर तू बहादुर होता तो मर्द होकर एक ग़रीब औरत के

सताने को हरगिज तैयार न होता ।

सवलत : बदजात, बस बंद कर, बकवास अपनी बंद कर ।
बढ़ इधर, तलवार खेंच, आ रोक वार और वार कर ॥

[दोनों में लड़ाई होती है । फीरोज जल्द ही सवलत को काबू कर लेता है]

फीरोज : बोल ओ मगरूर, अब वह बदजबानी क्या हुई ?
धमकियां, गुस्सा, जवानी, पहलवानी क्या हुई ?
चाक कर दूं दिल, जिगर, वह लनतरानी क्या हुई ?

रजिया : बस, रहम ! ऐ सरदार ! रहम !

फीरोज : काट लू नापाक सर ?

रजिया : बस रहम, ऐ सरदार ! रहम !

[फीरोज सवलत को गिरफ्तार करके ले जाता है]

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[स्थान—जंगल]

फजीहता : (स्वगत) शुक्र है अल्लाह का कि भेड़ियों के पंजों से रिहाई पाई। आज तक मैंने जो नेकियां की थीं, वह इस वक्त काम आईं। लाहौल विल्ला ! उन गधों ने मुझे बलि का बकरा जान लिया था जो हलाल करने का इरादा ठान लिया था ! खैर हुई कि कुदरत ने मौके पर डांटा ! जलजले के हजशियों को घर गांठा ! वरना इस जोर से पड़ता मौत का चांटा कि सर हो जाता पिस कर आटा। मियां सवलत रोते और मियां फजीहता कब्र की मसहरी पर पांव फैलाए सोते। मुई मौत का नसीबा जागा, सर पर पांव रखकर भागा ! गिरते-पड़ते इस जगह आए, जान बची, लाखों पाये !

[जमादार का प्रवेश]

जमादार : खबरदार ! ओ मक्कार !

फजीहता : अबे, तू कौन है नाबकार ? अगर अपनी सलामती दरकार हो तो यहां से फरार हो।

जमादार : और अगर तुझे जिन्दगी दरकार हो तो खड़े रहो, वरना मौत के लिए तैयार हो।

हता : जबान संभाल ! मौत के मुंह में हाथ न डाल !

जमादार : यानी क्या होगा ?

फजीहता : अभी मौत की ट्रेन में सवार कर कब्रिस्तान के स्टेशन पर भेज दिया जायगा।

जमादार : मैं जानता हूं कि तेरे ख्याल के इंजन में गुरूर की स्टीम कुछ ज्यादा बढ़ गई है जो जबान की रेल आदमियत की पटरी से अब उतर गई है !

फजीहता : जा भाई जा ! मुकाबले के प्लेटफार्म से हट जा और मौत व हयात के जंक्शन से सरक जा। नहीं तो बका की लाइन से फ़ना की लाइन पर भेज दिया जायगा।

जमादार : जबान तो शेखियों का धुआं उड़ाती है मगर आंखों की सुर्ख लाली दहशत का सिगनल दिखाती है !

फजीहता : जा भाई जा। खाकसारी के वेटिंग रूम में जाकर सो जा !

जमादार : बस, अब जबान की डाकगाड़ी ठहरा !

फजीहता : ऐ खुदाईगंज के पेसेंजर ! क्या सचमुच मौत का टिकट ले लिया है !

जमादार : मैंने अब लाइन क्लीयर दिया तो तुम समझ लेना कि मौत का पैग़ाम दिया ! (सीटी बजाता है। फौरन दो सिपाही आते हैं और फजीहता को गिरफ्तार कर लेते हैं)

फजीहता : कहां से आई यह फौजे-जर्रार, इलाही तौबा, इलाही तौबा !
हुए जो आफत में हम गिरफ्तार, इलाही तौबा, इलाही तौबा !

जमादार : भुलाए सब तूने कौल-ओ-करार, इलाही तौबा, इलाही तौबा !
बड़ा ही फितना, बड़ा ही मक्कार !
इलाही तौबा, इलाही तौबा !

[सब फजीहता को पकड़कर ले जाते हैं]

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[स्थान—रज़िया का मकान। रज़िया अंदर से कुछ गुनगुनाती आती है]

रज़िया : (ऊपर चांद की तरफ देखकर) चांद, चांद, देख मेरे सूरज की सवारी आती है ! (अन्दर जाती है)

फीरोज़ : (आकर हाथ के फूल से) बस, बस, ये डींगें रहने दे—

उसी के हुस्न दिलकश की बदौलत दिलरुबा है तू।
बगरना घास है या पत्तियां, बस और क्या है तू ?
चमन में बुलबुलों के सामने शर्माऊंगा तुझको,
मैं उसके प्यारे हाथों से सज़ा दिलवाऊंगा तुझको।

(रज़िया आती है)

रज़िया : जनाब, आप यहां हैं !; मैं तो समझती थी कि अध्ययन कर रहे होंगे या गमग़ीन फूलों से जी बहला रहे होंगे।

फीरोज़ : हां, प्यारी रज़िया, मैं अभी बाग से आया हूं और एक ज़बरदस्त चोर को भी आपके पास गिरफ्तार करके लाया हूं।

रज़िया : क्या चोर ?

फीरोज़ : जी !

रज़िया : कहां है ?

फीरोज़ : यह है (फूल दिखाता है।)

रज़िया : यह फूल ?

फीरोज़ : जी हां, यही नामाकूल !

रज़िया : इसने क्या चीज चुराई है ?

फीरोज़ : तुम्हारी रानाई, तुम्हारी खूबसूरती, तुम्हारी खुशअदायी ! यह बहार इस हुस्न की है, यह हंसी इन होंटों की है। यह रंगत इन गालों की है, यह खुशबू इन बालों की है ! —
कैद का, कत्ल का, फांसी का सज़ावार है यह।
हुस्न का चोर है, मुजरिम है, गुनहगार है यह ॥

रज़िया : जनाब, बख्श दें ! मेरी नजर में तो गरीब का कोई कसूर नहीं और अगर हो भी तो मुजरिम को सजा देना मेरा दस्तूर नहीं।

फीरोज़ : अगर आप सजा देना नहीं चाहती हैं तो इसके यह मानी हुए कि आप इस चोर की हिम्मत बढाती हैं और दूसरे इन्सानों को चोरी करना आप सिखाती हैं।

रज़िया : माशा अल्ला ! आप तो बिलकुल वकीलों की तरह बहस करते हैं !

फीरोज़ : जी वकील कैसा, मैं तो आजकल इश्क के हाईकोर्ट का बैरिस्टर हो रहा हूं।

रज़िया : तो बैरिस्टर साहब, मैं बहैसियत एक जज के अब आपके केस को डिसमिस करती हूं।

फीरोज़ : नहीं जज साहब, आप मेहरबानी करें और अपने फैसले पर खुद ही नज़रसानी करें।

रज़िया : अजी जनाब ! अगर मैं अपने मुजरिमों का फैसला इन्साफ के मुताबिक करती तो आपको, जो सबसे बड़े मुजरिम हैं, क्यों माफ करती ?

फीरोज़ : तो क्या मैंने भी कोई कसूर किया है ?

रज़िया : जरूर किया है।

फीरोज़ : मेरी क्या खता पाई ?

रज़िया : जो इस वक्त इस फूल से अमल में आई।

फीरोज़ : इसने तो चोरी की है।

रज़िया : तो आपने सीनाज़ोरी की है ! —

दोनों मेरे मुजरिम हैं, दोनों का एक क़रीना है।
इसने रंगत लूटी है, तो आपने दिल को छीना है!

फीरोज़ : इस तोहमत को हठधर्मी और सीनाजोरी कहते हैं,
दिल को देकर दिल लेना, क्या इसको चोरी कहते हैं?

रजिया : कैसा दिल का लेना, देना, मुंह की सब तर्रारी है।
आप कोई सौदागर है? या बंदी कोई व्यापारी है?

फीरोज : प्यारी रजिया, हम दोनों के व्यापारी होने में शक ही क्या है? जिस रोज काज़ी साहब शादी के इकरारनामे पर हम दोनों के दस्तखत करायेंगे तो उस रोज से रजिया फीरोज के हाथ और फीरोज रजिया के हाथ हमेशा के लिए बिक जायेंगे।

(दोनों मिलकर गाते हैं)

फूले शफ़क तो जर्द हो गालों के सामने,
पानी भरे घटा तेरे बालों के सामने।
पियरवा, कलेजे उठे मेरे पीर!
तुम बिन नाहीं पड़े मोहे धीर,
बांका सांवरिया, मोरा पियरवा,
जैसे मारे दोधारी कटार।
मारे अरे राम! पलकों की कमान, तक तक बान
जख्मी करत हाय पियरवा! ...

(दोनों जाते हैं)

[पटाक्षेप]

चौथा दृश्य

[स्थान—जंगल। सवलत हुसना की तस्वीर को सम्बोधित करता है। हुसना मर्दाना भेष में मौजूद है]

सवलत : तू कहती है कि मैं हुसना हूं! मेरी आंखें भी कहती हैं कि तू हुसना है। मगर हुसना के दिल में मुहब्बत, होंठों पर तसल्ली, आंखों में हमदर्दी पाई जाती थी, हुसना तो मुझे गमगीन देखकर घंटों आंसू बहाया करती थी मगर तू मेरी तरफ से बिल्कुल बेपरवा है। तेरे पास न मेरे लिए अफसोस है, न तसकीन है, न हमदर्दी के आंसू हैं। दूर हो, ऐ सर्द कागज ! खामोश हो ! तू हुसना नहीं है बल्कि मेरी किस्मत की बुराई है जो हुसना की शक्ल बनाकर मेरी ज़िल्लत का तमाशा देखने आई है।

हुसना : (स्वगत) अफ़सोस ! मेरी तरह मेरी तस्वीर भी बदनसीब है ! ग़रीब तस्वीर, तू क्यों नहीं इसके सलूक की शिकायत करती ? क्या मेरी तरह तू भी इससे मुहब्बत करती है !

सवलत : किधर गई ? कहां गई ? तू ने देखा, वह कहां गई ?

हुसना : कौन ?

सवलत : हुसना, मेरी प्यारी हुसना। (तस्वीर उठाकर) यह है। हां, हां, तू हुसना है। वही रहम और मुहब्बत वाली हुसना है। तू जरूर मेरे जख्मी दिल पर तसल्ली का मरहम लगाती; तू जरूर मेरी मुसीबत पर आंसू बहाती। मगर तेरे चुप रहने

या सबब यह है कि मेरी मुसीबत देखकर तेरे होश-हवास खो गए हैं। तेरे न रोने की वजह यह है कि गम के शोलों से तेरी आंखों के तमाम आंसू खुश्क हो गए हैं। बोल, बोल, मैं अपने इन पापी हाथों को, जिन्होंने तेरे हाथ की ऐसी बेअदबी की है, तोड़ दूं, काट दूं, पीस दूं ! (हुसना से) ऐ शख्स, इधर आ !

हुसना : इरशाद।

सवलत : यह क्या है ?

हुसना : तस्वीर।

सवलत : किसकी ?

हुसना : औरत की।

सवलत : झूठ है।

हुसना : क्यों ?

सवलत : झूठ है।

हुसना : वजह ?

सवलत : बेशऊर ! औरत क्या ऐसी फरमांबरदार होती है ? औरत क्या ऐसी वफादार होती है ? औरत तो लालची, ऐश-ओ-इशरत, दौलत परस्त, गर्जपरस्त और बदकार होती है। यह औरत नहीं, फरिश्ता है। हूर है, नूर है। यह मुहब्बत करती है, सच्ची मुहब्बत ! वह मुहब्बत जिसके लिए जमाना तरसता है। वह मुहब्बत जिसके पाये जाने के बाद इन्सान बहिश्त को हेय समझता है।

हुसना : मैंने सुना है कि उससे ज्यादा अब्बासी आपसे मुहब्बत करती है !

सवलत : अब्बासी ? मेरी जिन्दगी को तारीक बनाने वाली साया, शैतान की इकलौती बेटी ! दुनिया की बदतरीन हस्ती ! ओ खुदा, तेरे पास जितनी ताकतें हैं, अब्बासी की रूह से इन्तिक़ाम में खर्च कर दे !

हुसना : नहीं जनाब ! वह मर चुकी ! अब यूं कहिए कि खुदा उसे माफ कर दे !

सवलत : माफ़ कर दे ? बख्श दे ! जा, दूर हो, निकल जा ! शैतान के लिए माफी चाहता है ? लानत के लिए रहम मांगता है ? जा, जा, मुझे अब कभी मुंह न दिखाना। जब मैं कंगाल हालत में अपनी किस्मत पर मातम करता हुआ मर जाऊंगा, तो मेरी कब्र पर ठोकर मारने आना।

हुसना : क्या मैं चला जाऊं ? आप मुझसे नफरत करते हैं ?

सवलत : अगर तू मेरी मुहब्बत चाहता है और मेरे साथ रहना चाहता है तो अब्बासी के ख्याल पर खाक डाल दे। अब्बासी और उसकी मुहब्बत तेरे जिस्म के जिस हिस्से में होगी, उसे वहां से खेंचकर बाहर निकाल दूंगा। रूह में होगी तो रूह को नास करके जिस्म को चाहूंगा। अगर जिस्म में होगी तो जिस्म को बर्बाद करके रूह को प्यार करूंगा। अगर दोनों में होगी तो दोनों को फना करूंगा। दोनों में नहीं, तो दोनों को प्यार करूंगा।···मैं तुझे बहुत परेशान करता हूं ?

हुसना : जरा नहीं !

सवलत : नहीं, मैं तुझे परेशान करता हूं, माफ कर दे। तू फरिश्ता है क्योंकि एक नाशुक्रे इन्सान के लिए चार रोज से बराबर तकलीफ़ें उठा रहा है—

जकड़े हुए इनायतों से बंद बंद हैं !
दिल, जिस्म, रूह सब तेरे एहसानमंद हैं !
जाकर सुनाऊंगा हरेक अहले अदम को मैं
रखूंगा याद क़ब्र में भी इस करम को मैं।

हुसना : की खिदमतें तो आप पे एहसान किया क्या ?
इन्सान पर जो फर्ज है, वह फर्ज अदा किया !
आपकी खुशी मेरा ईमान है।

सवलत : खुशी ! खुशी मेरे लिए नहीं पैदा हुई। ऐसे बेमानी लफ्ज़ को मेरी क़ब्र के पत्थर पर खोदने के लिए रख छोड़ो। आजसे कुछ रोज पहले थोड़ी-सी खुशी हाथ आई थी। वह खुशी मेरी तकदीर दूसरों की तकदीर से भीख मांग कर लाई थी।

हुसना : आप किस पर भरोसा रखते हैं ? खुदा पर ! वह खुदावंद करीम रहीम है, फिर मायूस होने की क्या वजह ?

सवलत : इस दुनिया में मायूसी और तारीकी के सिवा मेरे लिए क्या रखा है ? खून, जुल्म, चोरी, डाका—ये सब बड़े गुनाह हैं और इन सबके लिए माफी है, मगर इन सबसे बड़ा गुनाह क्या है ? तू जानता है कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है ?

हुसना : वक्त को बुराई में गवाना।

सवलत : नहीं।

हुसना : मां-बाप को सताना ?

सवलत : नहीं।

हुसना : खुदा को भूल जाना।

सवलत : नहीं।

हुसना : गरीब को सताना ?

सवलत : हां, गरीब को सताना। दोस्त बनकर दोस्त के गले पर छुरी चलाना। फरिश्ते लानत करते हैं, मैंने वह जुल्म ढाया है। हुसना थी दोस्त, मैंने दोस्त को सताया है।

हुसना : अगर खुदा की कुदरत है तो हुसना जिन्दा है और आपको तसल्ली देने के लिए यहां आयेगी।

सवलत : ठहर, ठहर ! क्या तू भी मेरी तरह दीवाना है ? या मुझे और दीवाना बनाना चाहता है ? क्या इस दुनिया में इन्सान—इस जलील दुनिया में इन्सान दोबारा वापस आ सकता है ?

हुसना : खुदा में सब कुदरत है। फर्ज कर लो कि ऐसा हो तो आप उसके साथ क्या सलूक करेंगे ?

सवलत : मैं क्या सलूक करूंगा ? यह मैं नहीं कह सकता कि मैं क्या सलूक करूंगा—

क़ुर्बान हूंगा हर दम उस बावफ़ा सनम पर।
आंखें बिछाऊंगा मैं उसके क़दम क़दम पर।
यह जान सदके होगी, यह दिल फिदा करूंगा।
जितनी जफ़ाएं की थीं, उतनी वफ़ा करूंगा।

हुसना : ऐ आसमान सुन, ऐ तारो, गवाह रहना।
वायदे पे अपने कायम ऐ रश्के-माह रहना।

[हुसना अपना भेष उतार कर असली रूप में प्रकट होती है]

सवलत : या खुदा! यह क्या? हुसना, तू जिन्दा है!

हुसना : नहीं, नहीं, परेशानी की क्या जरूरत है? देख लो यह वही शक्ल, वही सूरत! न घबराओ, न घबराओ! आओ, आओ, मेरे पास आओ! मेरे सीने से लग जाओ!

सवलत : हुसना, हुसना! —
मुजरिम हूं, पुर-कसूर हूं, तक़सीरवार हूं।
सजा का हक़दार हूं, तेरा गुनहगार हूं।
लेकिन तू नेकदिल है, सखी है, करीम है।
कर दे गुनाह माफ कि मैं शर्मसार हूं।

हुसना : शुक्रे-खुदा कि आज मैं तुमको अजीज हूं।
आक़ा हो तुम मेरे, मैं तुम्हारी कनीज हूं।

(दोनों बगलगीर होते हैं)

[पटाक्षेप]

पांचवां दृश्य

[स्थान—रास्ता]

फज़ीहता : (स्वगत) किश्ती-ए-मसकीं फज़ीहता दरभंवर उफ़्तादा अस्त।
डुबकूं डुबकूं मी कुंदहीं अज़ तवज्जह पार कुन।
वाह रे तक़दीर! तेरा भी क्या कहना! देवी माता के भोग से खुदा-खुदा करके बचे, तो जेलखाने के मज़बूती सीखचों में फंसे! डाकुओं से खुदा ने छुड़ाया तो जासूसों ने आ गला दबाया और इस मुसीबत में आ फंसाया! मेरी समझ में नहीं आता कि मुझको यहां क्यों पकड़ लाये हैं? मेरी ममियाई निकालेंगे या कच्चा ही चबायेंगे! (साइड में देखकर) या खुदा! यह तो फिर वही एक दो तीन की मशीन वाला!

(फीरोज आता है)

फीरोज़ : कमबख्त! क्या बगुला भगत और बहरूपिया बना है!

फज़ीहता : (स्वगत) मैं इसका जवाब कुछ नहीं दूंगा।

(गूंगा बन आता है)

फीरोज़ : क्यों साईं दाता! कुछ ऊंचा सुनते हो?

फज़ीहता : आ आ आ आ···!

फीरोज़ : मैंने क्या कहा? आपको सुनाई नहीं देता?

फज़ीहता : (स्वगत) नहीं।

फीरोज़ : अफसोस, बेचारा गूंगा है!

[illegible] : (स्वगत) जी हां!

फीरोज : आपको यह रोग कब से हुआ है ?

फजीहता : (स्वगत) तेरे आते ही।

फीरोज : खुदा जाने बेचारे की जबान कब खुलेगी ?

फजीहता : (स्वगत) अरे तू अभी दफा हो जाय तो मेरा मुंह खुल जाय !

फीरोज : तो तुमको बहुत तकलीफ होती होगी ?

फजीहता : (स्वगत) हां, हां !

फीरोज : तो मैं तुम को इस मुसीबत से निकालूं ?

फजीहता : (स्वगत) आपकी बड़ी मेहरबानी !

फीरोज : चलो तुम सीधे खड़े हो जाओ, एक गोली मेरे पास है, मंत्र पढ़कर तुम्हारे रोग पर छोड़ता हूं !

फजीहता : (स्वगत) या रसूलुल् आलमीन ! इसने तो फिर निकाली वही एक दो तीन वाली मशीन !

फीरोज : या बीरम खैर फ़कीरम, हजरत शाह फदीरम, पीर-फ़कीर, शरीर, खैर ! अब एक दो तीन और सैरम खैर !

(फायर करता है)

फजीहता : मार डाला ! मार डाला !

फीरोज : अबे क्यों, क्या हुआ ?

फजीहता : होना क्या था, अच्छा हो गया !

फीरोज : अबे, तू तो गूंगा था !

फजीहता : मगर अब बोलने लग गया हूं।

फीरोज : वह कैसे ?

फजीहता : इस दुखभंजन को देखकर।

फीरोज : देखो इस चीज की करामात ! कितनी जल्दी लगे करने बात !

फजीहता : (स्वगत) यह शैतान मुझे जरूर पहचान गया है। (प्रकट) देखिए सरकार, मैं कोई फकीर-वकीर नहीं हूं।

फीरोज : तो ?

फजीहता : मैं तो वही तुम्हारा एक दो तीन वाला फजीहता हूं !

फीरोज : कौन फजीहता ! अबे वाह यार ! तुझे तो बहुरूपिया बनना भी खूब आता है !

फजीहता : मगर आप मेरे भी उस्ताद हैं। बस साहब, यहां से मुझे अब जाने दो !

फीरोज : अच्छा, जरूर ! पैदल नहीं, सवार !

फजीहता : हैं ! तो आप क्या मेरे वास्ते पालकी मंगायेंगे ?

फीरोज : बेशक ! हम तुमको चार के कांधे पर उठवायेंगे !

फजीहता : हैं ! तो क्या आप मेरा जनाजा उठायेंगे ?

फीरोज : हां, तो इसमें क्या शामत है, तुझको मर जाने की आदत है। चलो, जल्दी सीधे खड़े हो जाओ। एक···दो···

फजीहता : हैं ! फिर वही ऐल-फैल ! मियां, तुम आदमी हो या बैल ! बार-बार चक्कर लगाते हो, इस मनहूस दायरे के बाहर नहीं जाते हो ! आखिर, घड़ी-घड़ी एक···दो···की रट लगाने से तुम्हारा मतलब ?

फीरोज : मतलब यह है कि एक···दो···करके तेरा खात्मा करना चाहता हूं।

फजीहता : मगर इस मेहरबानी से क्या हासिल होगा ?

फीरोज : यही कि तू सीधा जहन्नुम दाखिल होगा।

फजीहता : जगह तो मेरे दोस्त ने अच्छी तजवीज की है ! जनाब, उस पुर-तकल्लुफ जगह पर भेजने की कुछ खता या तफसीर ?

फीरोज : एक आदमी को पानी में डुबाया और वसीयतनामा चुराने की तफ़सीर !

फजीहता : एक आदमी को पानी में डुबाया और वसीयतनामा चुराया ? किसने मुझे वसीयतनामा चुराते देखा है ?

फीरोज : देखना कैसा, वह खुद ही आ गया, जिसको दावा है !

[हुसना रूह की शक्ल में आती है]

फजीहता : कौन ? हुसना की रूह ! खुदाया ! यह क्या आफत आई, जो ताजा कयामत लाई !

फीरोज : न आफत है, न कयामत है। फक्त तेरे एमाल की शामत है।

हुसना : जिसे हां, ढूंढ़ता था दिल, यही है।
सितमगर, मूजी व क़ातिल यही है।

फज़ीहता : मैं मरा, मैं जला, मैं फ़ना हुआ!

फीरोज़ : देख, और पहचान! है न यह वही रूहे-गम जो तेरे हाथों पहुंची है मुल्के-अदम! तू नहीं जानता तो यह……

फज़ीहता : मर गए बेटा फज़ीहता, हाय! हाय!

हुसना : भड़क, भड़क! ऐ जहन्नुम की आग भड़क! ऐ इन्तिकाम की बिजली कड़क!

फज़ीहता : हाय! हाय! इसने तो कड़क-भड़क करके मेरी जान आधी कर दी!

हुसना : तेरा नाम फज़ीहता है?

फज़ीहता : जी हां, आपने बजा फरमाया। जिन्दगी-भर में पहली ही बार सच बोलने का मौका आया।

हुसना : तू ने कभी किसी वसीयतनामे पर हाथ साफ किया?

फज़ीहता : मगर उसको तो इस एक…दो…तीन की मशीन ने खा लिया।

हुसना : और तूने ही मुझको दरिया में डुबोया था?

फज़ीहता : हां, सच है, मेरे उस्ताद!

हुसना : सवलत को भी तूने ही आवारा और खराब किया?

फीरोज़ : बोल, इस जुर्म को भी तूने कबूल किया?

फज़ीहता : मगर कुदरत ने मुझे ऐसे ही शरीफ कामों के लिए इन्तिखाब किया!

हुसना : और रज़िया को भी तूने ही फंसाया था नमकहराम?

फीरोज़ : जवाब दे, ओ बदकाम!

फज़ीहता : अरे, कुदरत करे काम, और बीच में फज़ीहता खां बदनाम!

हुसना : अच्छा, तो अब खुदा के घर चलो।

फज़ीहता : नहीं, ऐसा न करो! मुझे छोड़ दो। मैं अब पक्का वायदा करता हूं कि जब मेरी मौत आयेगी तो मैं खुशी से मर जाऊंगा।

हुसना : बातें न बनाओ ! मैं दोजख के फरिश्तों से वायदा कर आई हूं कि तुम्हारे लिए मैं दुनिया से नाश्ता लाती हूं।

फजीहता : तौबा ! तौबा ! तुम तो बैरिस्टरों की सी बातें करती हो ! ऐ इकबाल वाली रूह ! जिस तरह तू मुझे ले जाने को समर्थ है, उसी तरह छोड़ देने को भी समर्थ है।

हुसना : हां, ताकि मुझ जैसे बेगुनाहों को रोज खून के दरिया में गोते दिया करे ?

फजीहता : नहीं खातून, मैं तेरे सामने कसम खाता हूं।

हुसना : भला मुझे क्योंकर एतबार आए ? आज कसम खाये और कल पलट जाय !

फजीहता : पलट कैसे जाऊं ? तुमने तो प्लेग की तरह मेरा घर देख लिया है !

हुसना : हां, इतना यकीन है।.

फजीहता : मैं कसम खाता हूं···

फीरोज. कि कभी कौल का पास न करूंगा, वायदे का लिहाज न करूंगा !

फजीहता : अरे ठहर, यार ! तू क्यों दखल-दर-माकूलात देता है ? हुजूर। आप फरमायें तो मैं रोजे रखूं। नमाज पढ़ूं, जकात दूं। लम्बी-लम्बी माला फेरूं, मक्का का हाजी बन जाऊं।

हुसना : अच्छा तो कसम खा कि खुदाया, मैं बदी से बाज आया। कभी किसी से बुराई न करूंगा और हमेशा भलाई करूंगा।

फजीहता : और कभी भूले से हो जाय तो ?

हुसना : हां, तो फिर पकड़ूं गरदन और घोटूं गला ?

फजीहता : अच्छा, अच्छा, ऐसा न करो, मैंने सब बातें मान लीं।

हुसना : अच्छा तो अब मेरे पास आओ।

फजीहता : नहीं, नहीं, बानो साहिबा ! पास आने की बात नहीं। जिन्दा और मुर्दे का क्या साथ ? तुम हसी-हंसी में मेरी जान कब्ज कर लो तो फिर मैं क्या करूंगा ?

हुसना : अरे अहमक, सुन ! मैं भी तेरी तरह एक इन्सान हूं।